BETI KI PARWARISH (HINDI)

वालिदैन के लिये बेटियों की तर्बिय्यत से मुतअ़ल्लिक़ बुन्यादी बातों पर मुश्तमिल

एक नसीह़त आमोज़ तह़रीरी बयान

बेटी की परवरिश

- क़ब्ल अज़ इस्लाम औ़रत की ह़ैषिय्यत 6
- बेटी की परवरिश के मदनी फूल 16
- आदाबे ज़िन्दगी 39
- बचपन की आ़दत कम ही छूटती है 45

पेशकश : मर्कज़ी मजलिसे शूरा

(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

क़िताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **दीनी** किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले जे़ल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(المُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکربیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

क़िताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

क़िताब की त़बाअ़त में नुमायां **ख़राबी** हो या **सफ़ह़ात कम हों** या **बाइन्डिंग** में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

मजलिसे तराजिम (हिन्दी–गुजराती) दा'वते इस्लामी

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** की मजलिस **"अल मदीनतुल इल्मिय्या"** ने येह रिसाला **"बेटी की परवरिश"** उर्दू ज़बान में पेश कीया है।

मजलिसे तराजिम, बरोडा (हिन्दी–गुजराती) ने इस किताब को हिन्द (INDIA) की **राष्ट्रिय भाषा "हिन्दी"** में रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** या'नी ज़बान (बोली) तो उर्दू ही है जब कि लीपि (लिखाई) हिन्दी रखी है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब का **हिन्दी रस्मुल ख़त़** करते हुवे दर्जे ज़ैल मुआ़मलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :-

﴾1﴿ कमो बेश दस(10) मराह़िल सर अन्जाम दिये गए हैं, जो येह हैं :-

(1) कम्पोज़िंग (2) सेटिंग (3) कम्पयूटर तक़ाबुल (4) तक़ाबुल बिल किताब (5) सिंगल रीडिंग (6) कम्पयूटर करेक्शन (7) करेक्शन चेकिंग (8) फ़ाइनल रीडिंग (9) फ़ाइनल करेक्शन (10) फ़ाइनल करेक्शन चेकिंग।

﴾2﴿ क़रीबुस्सौत़ (या'नी मिलती झुलती आवाज़ वाले) हुरूफ़ के आपसी इमतियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़्सूस हुरूफ़ के नीचे डॉट (·) लगाने का ख़ुसूसी एहतिमाम किया गया है जिस की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **तराजिम चार्ट** का बग़ौर मुत़ालआ़ फ़रमाइयें।

﴾3﴿ हिन्दी पढ़ने वालों को सह़ीह़ उर्दू तलफ़्फ़ुज़ भी हिन्दी पढ़ने ही में ह़ासिल हो जाएं इस लिये आसान मगर **अस्ल उर्दू लुग़त के तलफ़्फ़ुज़** के ऐन मुताबिक़ ही **हिन्दी–जोडणी** रखी गई है और बत़ौरे ज़रूरत ब्रेकेट में उर्दू लफ़्ज़ हिज्जे के साथ ऐ'राब लगा कर रखा गया है। नीज़ उर्दू के मफ़्तूह़ (ज़बर वाले) ह़र्फ़ को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के अक्षर (ह़र्फ़) के पहले डेश (-) और साकिन (जज़्म वाले) ह़र्फ़ को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के अक्षर (ह़र्फ़) के नीचे खोड़ा (_) इस्ति'माल किया गया है। मषलन **उ़-लमा** (عُلَمَاء) में **"-ल"** मफ़्तूह़ और **रह़्म** (رَحْم) में **"ह़्"** साकिन है।

﴾4﴿ उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां कहीं ऐन साकिन (عْ) आता है उस की जगह पर हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कॉमा (’) इस्ति’माल किया गया है। जैसे : **दा’वत** (دَعْوَت)

﴾5﴿ अ़रबी-फ़ारसी मतन के साथ साथ अ़रबी किताबों के ह़वालाजात भी अ़रबी ही रखे गए हैं जब कि “عَزَّوَجَلَّ”, “صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم” और “رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه” वग़ैरा को भी अ़रबी ही में रखा गया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़-लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, e-mail या sms) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर षवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी (रस्मुल ख़त़) का तराजिम चार्ट

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
झ = جھ	ज = ج	ष = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ

अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स़ = ص	श = ش	स = س
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	’ = عْ
य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	घ = گھ
् = ْ	ु = ُ	ि = ِ	- = َ	ी = ئ	ू = وُ	ा = آ

-: **राबित़ा** :-

मजलिसे तराजिम, मक्तबतुल मदीना (दा’वते इस्लामी)
मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर,
नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द
Mo. + 91 9327776311
E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

बेटी की परवरिश[1]

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने तक़र्रुब निशान है : जिस ने मुझ पर **100** मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत शुहदा के साथ रखेगा।[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

1 .....मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी व निगराने मर्कज़ी मजलिसे शूरा ह़ज़रते मौलाना अबू ह़ामिद ह़ाजी मुह़म्मद इमरान अ़त़्तारी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِى ने येह बयान **14** शव्वालुल मुकर्रम **1431** हि. ब मुत़ाबिक़ **23** सितम्बर **2010** ई. को तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना (कराची) में हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में फ़रमाया।

10 रबीउ़ल अव्वल **1434** हि. ब मुत़ाबिक़ **23** जनवरी **2013** ई. को ज़रूरी तरमीम व इज़ाफ़े के बा'द तह़रीरी सूरत में पेश किया जा रहा है।

(शो'बए रसाइले दा'वते इस्लामी, मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

2 مجمع الزوائد، کتاب الادعیۃ، باب فی الصلاۃ علی النبی، ۱۰/۲۵۳، حدیث: ۱۷۲۹۸

अनोखी शहज़ादी

हज़रते सय्यिदुना शैख़ शाह किरमानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی की शहज़ादी जब शादी के लाइक़ हुई तो बादशाह के यहां से रिश्ता आया मगर आप ने तीन दिन की मोहलत मांगी और मस्जिद मस्जिद घूम कर किसी पारसा नौजवान को तलाश करने लगे। एक नौजवान पर आप की निगाह पड़ी जिस ने अच्छी त़रह़ नमाज़ अदा की (और गिड़गिड़ा कर दुआ मांगी)। शैख़ ने उस से पूछा : क्या तुम्हारी शादी हो चुकी है? उस ने नफ़ी (नहीं) में जवाब दिया। फिर पूछा : "क्या निकाह़ करना चाहते हो ? लड़की कुरआने मजीद पढ़ती है, नमाज़ रोज़े की पाबन्द है और सीरत व सूरत वाली भी है।" उस ने कहा : भला मेरे साथ कौन रिश्ता करेगा ! शैख़ ने फ़रमाया : मैं करता हूं, लो येह कुछ दिरहम ! एक दिरहम की रोटी, एक का सालन और एक की ख़ुश्बू ख़रीद लाओ। इस त़रह़ शाह किरमानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی ने अपनी दुख़्तरे नेक अख़्तर का निकाह़ उस से पढ़ा दिया। दुल्हन जब दुल्हा के घर आई तो उस ने देखा कि पानी की सुराह़ी पर एक रोटी रखी हुई है। उस ने पूछा : येह रोटी कैसी है ? दुल्हे ने कहा : येह कल की बासी रोटी है मैं ने इफ़्त़ार के लिये रख ली थी। येह सुन कर वोह वापस होने लगी। येह देख कर दुल्हा बोला : मुझे मा'लूम था कि शैख़ शाह किरमानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی

की शहज़ादी मुझ ग़रीब इन्सान के घर नहीं रुक सकती । दुल्हन बोली : मैं आप की मुफ़्लिसी के बाइ़ष नहीं बल्कि इस लिये लौट कर जा रही हूं कि रब्बुल आ़लमीन पर आप का यक़ीन बहुत कमज़ोर नज़र आ रहा है जभी तो कल के लिये रोटी बचा कर रखते हैं । मुझे तो अपने बाप पर ह़ैरत है कि उन्हों ने आप को पाकीज़ा ख़स्लत और सालेह़ कैसे कह दिया ? दुल्हा येह सुन कर बहुत शर्मिन्दा हुवा और उस ने कहा : इस कमज़ोरी से मा'ज़िरत ख़्वाह हूं । दुल्हन ने कहा : अपना उ़ज़्र आप जानें, अलबत्ता ! मैं ऐसे घर में नहीं रुक सकती जहां एक वक़्त की ख़ूराक जम्अ़ रखी हो, अब या तो मैं रहूंगी या रोटी । दुल्हे ने फ़ौरन जा कर रोटी ख़ैरात कर दी (और ऐसी दुर्वेश ख़स्लत अनोखी शहज़ादी का शोहर बनने पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा किया) ।[1]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो ।

यक़ीने कामिल की बहारें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! मुतवक्किलीन की भी क्या ख़ूब अदाएं हैं । शहज़ादी होने के बा वुजूद ऐसा ज़बरदस्त तवक्कुल कि कल के लिये खाना बचाना गवारा ही नहीं ! येह सब यक़ीने कामिल की बहारें हैं कि जिस ख़ुदा ने आज खिलाया है वोह आइन्दा कल भी खिलाने पर यक़ीनन क़ादिर है ।

1 روض الرياحين، الحكاية الثانية والتسعون بعد المائة، ص ۱۹۲

शैख़ शाह किरमानी का तआ़रुफ़

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़मानए ख़िलाफ़त में इस्लामी फ़ुतूह़ात का सिलसिला जब वादिये मकरान के मग़रिब में वाक़ेअ़ वसीओ़ अ़रीज़ मुल्क "**किरमान**" तक पहुंचा तो उस वक़्त के शाहे किरमान ने इस्लामी सल्त़नत का बाज गुज़ार बनने में आ़फ़िय्यत जानते हुवे सुल्ह़ की त़रफ़ क़दम बढ़ाया और यूं इस्लाम के नूर से मुल्के किरमान के घर घर में उजाला होने लगा और तीसरी सदी हिजरी में किरमान के शाही ख़ानदान में एक ऐसी हस्ती पैदा हुई जिस ने इस ख़ानदान का नाम रहती दुन्या तक रोशन कर दिया, येह हस्ती थी ह़ज़रते सय्यिदुना शाह बिन शुजाअ़ किरमानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی की । शाही ख़ानदान से तअ़ल्लुक़ रखने के बा वुजूद आप का ह़ुकूमत से कोई वासित़ा न था, मगर लोगों के दिलों पर राज आप ही का था क्यूंकि एक रिवायत के मुत़ाबिक़ आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का शुमार अब्दालों में होता है ।

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मर्तबे की बुलन्दी का अन्दाज़ा सिर्फ़ इस बात से लगाया जा सकता है कि जब आप का विसाल हुवा तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन अह़मद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَحَد फ़रमाते हैं : मैं ह़ज़रते सय्यिदुना सहल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की ख़िदमत में ह़ाज़िर था कि अचानक हांपती कांपती एक कबुतरी हमारे सामने आ गिरी, मैं उसे उड़ाने लगा तो ह़ज़रते सय्यिदुना सहल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی

ने ऐसा करने से मन्अ़ करते हुवे इरशाद फ़रमाया : اَطْعِمْهَا وَاسْقِهَا या'नी इसे कुछ खिलाओ पिलाओ । ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने एक रोटी के छोटे छोटे टुकड़े कर के उस के आगे डाले तो वोह खाने लगी, फिर मैं ने पानी रखा तो उस ने पानी भी पी लिया, इस के बा'द वोह उड गई । मैं येह सब देख कर ह़ैरान हो रहा था, बिल आख़िर मैं ने पूछ ही लिया कि इस कबूतरी का माजरा क्या है ? तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : शाहे किरमानी इस जहाने फ़ानी से कूच फ़रमा गए हैं और येह कबूतरी मुझ से ता'ज़िय्यत करने आई थी ।[1]

अ़ज़ीम बाप की अ़ज़ीम बेटी

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर फ़रमाइये ! ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ शाह किरमानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانی ने इस क़दर अ़ज़ीम मर्तबे पर फ़ाइज़ होने के बा वुजूद अपनी शहज़ादी की परवरिश से ग़फ़्लत इख़्तियार न फ़रमाई बल्कि उसे दुन्या की चकाचोंद से दूर रखने के साथ साथ रिज़ाए ख़ुदावन्दी पर हर ह़ाल में साबिरो शाकिर रहने की मदनी सोच भी अ़ता फ़रमाई । लिहाज़ा याद रखिये ! अवलाद की परवरिश में जहां मां का बड़ा किरदार है वहां बाप भी एक अहम सुतून की ह़ैषिय्यत रखता है, बिल ख़ुसूस बेटी के मुआ़मले में बाप का किरदार बहुत अहम्मिय्यत का ह़ामिल है ।

---

1 حلیۃ الاولیاء، ذکر الجماعۃ العارفین العراقیین، شاہ بن شجاع الکرمانی، ۱۰/ ۲۵۴

क़ब्ल अज़ इस्लाम औ़रत की हैषिय्यत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस्लाम से क़ब्ल अगर दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुआ़शरों में औ़रत की हैषिय्यत देखी जाए तो मा'लूम होगा कि औ़रतें मर्दों की महकूमा थीं, मर्द ख़्वाह बाप होता या शोहर, बेटा होता या भाई, इन से जैसा चाहे सुलूक करता, औ़रतों की हैषिय्यत बस एक ख़िदमतगार की सी थी, कहीं इन के साथ जानवरों से बद तर सुलूक होता तो कहीं वराषत में दीगर मालो अस्बाब की त़रह़ इन का भी बटवारा होता। कहीं इन्हें शोहर की मौत के साथ उस की चिता (लकड़ियों का वोह ढेर जिस पर हिन्दू अपने मुर्दे को जलाते हैं) में ज़िन्दा जल कर सती होना पड़ता (या'नी बेवा को मुर्दा शोहर की लाश के साथ ज़िन्दा जला दिया जाता) तो कहीं पैदा होते ही इन्हें ज़मीन में ज़िन्दा दफ़्न कर दिया जाता क्यूंकि बेटी की पैदाइश को बाइषे आ़र (शर्मिन्दगी) समझा जाता था, बसा अवक़ात किसी शख़्स को मा'लूम होता कि उस के यहां बेटी की विलादत हुई है तो वोह कई दिनों तक लोगों के सामने न आता और ग़ौर करता रहता कि वोह इस मुआ़मले में क्या करे ? आया ज़िल्लत बरदाश्त कर के बेटी की परवरिश करे या आ़र से बचने के लिये अपनी बेटी को ज़िन्दा ज़मीन में दफ़्न कर दे। जैसा कि पारह **14** सूरतुन्नह़्ल की आयत नम्बर **58** और **59** में इरशाद होता है :

وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِالْاُنْثٰى ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ﴿۵۸﴾ يَتَوَارٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْٓءِ مَا بُشِّرَ بِهٖ ؕ اَيُمْسِكُهٗ عَلٰى هُوْنٍ اَمْ يَدُسُّهٗ فِى التُّرَابِ ؕ اَلَا سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿۵۹﴾ (پ۱۴، النحل:۵۸،۵۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जब उन में किसी को बेटी होने की ख़ुश ख़बरी दी जाती है तो दिन भर उस का मुंह काला रहता है और वोह ग़ुस्सा खाता है लोगों से छुपता फिरता है इस बिशारत की बुराई के सबब क्या उसे ज़िल्लत के साथ रखेगा या उसे मिट्टी में दबा देगा। अरे बहुत ही बुरा हुक्म लगाते हैं।*

ज़िन्दा दफ़्न करने की क़बीह रस्म का आग़ाज़

अ़हदे जाहिलिय्यत में कई क़बीह और संगदिलाना रस्में राइज थीं जिन्हें लोग बड़े फ़ख़्र से अन्जाम दिया करते थे, मषलन एक रस्म येह भी थी कि बा'ज़ लोग अपनी बेटियों को ज़िन्दा ज़मीन में दफ़्न कर दिया करते और इस पर ग़मज़दा या पशेमान होने के बजाए फ़ख़्र करते। इस ज़ालिमाना ह़रकत के आग़ाज़ की वजह येह बयान की जाती है कि एक बार रबीआ़ क़बीले पर उन के दुश्मनों ने शब ख़ून मारा और वोह रबीआ़ के सरदार की बेटी को उठा कर

ले गए। जब दोनों क़बीलों के दरमियान सुल्ह़ हुई तो उस लड़की को भी वापस कर दिया गया और उसे इख़्तियार दिया गया कि चाहे तो अपने बाप के पास रहे या क़ैद के दौरान जिस शख़्स के साथ रही थी उस के पास वापस चली जाए। उस ने उस शख़्स के पास जाना पसन्द किया तो उस के बाप को बड़ा गुस्सा आया और उस ने अपने क़बीले में येह रस्म जारी कर दी कि जब कीसी के हां बच्ची पैदा हो तो उस को ज़िन्दा ज़मीन में दबा दिया जाए ताकि आइन्दा उन के क़बीले की ऐसी रुस्वाई न हो। फिर दूसरे क़बाइल में भी येह रवाज आहिस्ता आहिस्ता मक़्बूलिय्यत (नुहूस्त) इख़्तियार करता गया।[1]

बेटियों को दफ़्न करने की चन्द वुजूहात

बेटियों को दफ़्न करने की इस के इलावा भी कई वुजूहात बयान की गई हैं :

- आ़म अहले अ़रब की मुआ़शी ह़ालत बड़ी ख़स्ता होती थी, बच्चियों को पालना, जवान करना, फिर उन की शादी करना वोह अपने लिये ना क़ाबिले बरदाश्त बोझ तसव्वुर करते थे, इस लिये उन को बचपन में ही ठिकाने लगा दिया करते थे।
- क़बाइल में बाहमी कुश्त व ख़ून (क़त्लो ग़ारत) रोज़ मर्रा का मा'मूल था। लड़के जवान हो कर ऐसी लड़ाइयों में उन का हाथ बटाते। लड़कियां लड़ाइयों में भी शिर्कत न कर

1 روح المعانی، الجزء الثلاثون، التکویر، تحت الآیۃ ۸، ص ۳۶۰

सकतीं और फिर इन को दुश्मन की दस्तबुर्द से बचाने के लिये भी उन्हें बसा अवक़ात मुख़्तलिफ़ मसाइल से दो चार होना पड़ता, इस लिये वोह इन को ज़िन्दा रखना अपने लिये वबाले जान समझते ।

- इन की जाहिलाना नख़्वत (घमन्ड) भी इस का एक सबब थी, वोह किसी को अपना दामाद बनाना अपनी तौहीन समझते थे इस से बचने का येही आसान त़रीक़ा था कि न बच्ची ज़िन्दा हो न उसे बियाहा जाए और न कोई उन का दामाद बने ।

वुजूहात अगर्चे मुख़्तलिफ़ और मुतअ़द्दिद थीं लेकिन येह ज़ालिमाना रस्म अ़रब के जाहिली मुआ़शरे में अपने पंजे गाड़ चुकी थी, आ़म त़ौर पर इसे कोई मा'यूब चीज़ या ज़ुल्म भी न समझा जाता । बाप अपनी अवलाद का मालिके कुल होता, चाहे उसे ज़िन्दा रखे या क़त्ल कर दे, किसी को इस पर ए'तिराज़ का कोई ह़क़ ह़ासिल नहीं था । बल्कि एक ही शख़्स अपनी कई कई बेटियों को ज़िन्दा दरगोर कर देता और उसे ज़र्रा भर अफ़्सोस न होता । जैसा कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन आ़सिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक बार सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे तो (ज़मानए जाहिलिय्यत में बेटियों के ज़िन्दा दरगोर करने के फ़े'ल पर शर्मसार होते हुवे) अ़र्ज़ की : मैं ने ज़मानए जाहिलिय्यत में आठ बेटियों को

ज़िन्दा दफ़्न किया (क्या मेरा येह गुनाह मुआ़फ़ हो जाएगा ?) तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : (मुआ़फ़ तो इस्लाम लाने के साथ ही हो चुका है, अलबत्ता !) हर ज़िन्दा दरगोर की गई बेटी के बदले तुम एक गुलाम आज़ाद करो। अ़र्ज़ की : मेरे पास ऊंट बहुत हैं। इरशाद फ़रमाया : तो फिर हर बेटी के बदले एक जानवर सदक़ा करो।[1]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन आ़सिम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के इक़रार से ब ख़ूबी येह अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि जब इन्हों ने अपनी आठ बेटियों को ज़िन्दा दफ़्न किया था तो न मा'लूम दूसरों ने कितनी बेटियों को दफ़्न किया होगा ! लेकिन इस के बा वुजूद इस संग दिल मुआ़शरे में ख़ाल ख़ाल ऐसे लोग भी मौजूद थे जो मा'सूम बच्चियों की बे कसी पर ख़ून के आंसू बहाते और जहां तक मुमकिन होता बच्चियों को ज़िन्दा दफ़्न होने से बचाने की कोशिश करते। मषलन अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के चचाज़ाद भाई और ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के वालिद ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल को जब पता चलता कि फ़ुलां के हां लड़की पैदा हुई है और वोह उस को ज़िन्दा दफ़्न करना चाहता है तो दौड़ कर उस के पास जाते और उस बच्ची की परवरिश और उस की शादी वग़ैरा के अख़राजात की

مدینہ

1 المعجم الکبیر، ۱۸/۳۳۷، حدیث: ۸۶۳

ज़िम्मेदारी उठाते और इस त़रह़ उस नन्ही कली को खिलने से पहले ही मसल डालने से बचा लेते। मश्हूर शाइ़र फ़र्ज़दक़ के दादा ह़ज़रते सय्यिदुना सा'सआ़ बिन नाजिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का भी येही मा'मूल था, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा आलूसी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने त़बरानी के ह़वाले से लिखा है कि ह़ज़रते सय्यिदुना सा'सआ़ बिन नाजिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं ने ज़मानए जाहिलिय्यत में (भी नेक काम किये हैं, क्या मुझे इन का भी अज्र मिलेगा ? मषलन मैं ने) **360** बच्चियों को ज़िन्दा दरगोर होने से बचाया और हर एक के इ़वज़ दो दो दस दस माही गाभन ऊंटनियां और एक एक ऊंट बत़ौरे फ़िदया उन के बापों को दिया, क्या मुझे इस अ़मल का कोई अज्र मिलेगा ? तो सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इस अ़मल का अज्र तो तुझे मिल गया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुझे इस्लाम लाने की तौफ़ीक़ मरह़मत फ़रमाई और तुझे ने'मते ईमान से सरफ़राज़ कर दिया।[1]

बेटियों को मिला इस्लाम का साइबान

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस्लाम की सुब्ह़े नूर क्या तुलूअ़ हुई हर त़रफ़ कुफ़्र और ज़ुल्मो सितम का अन्धेरा भी ख़त्म हो गया और यूं बेटियों को इस्लाम की बरकत से एक नई ज़िन्दगी

مدینہ

1 روح المعانی، الجزء الثلاثون، سورۃ التکویر، تحت الآیۃ ۹، ص ۳۶۱

المعجم الکبیر، ۸/ ۷۷، حدیث: ۷۴۱۲

मिली । जो लोग पहले बेटियों को ज़िन्दा दरगोर करने में फ़ख़्र महसूस करते थे, अब बेटियों को अपनी आंखों का तारा समझने लगे क्यूंकि बे कसों के ग़मख़्वार, हबीबे परवर दगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के सामने न सिर्फ़ अपनी शहज़ादियों से महब्बत का अमली नुमूना पेश किया बल्कि उन का येह मदनी ज़ेहन भी बनाया कि बेटियों को आर न समझा जाए क्यूंकि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रहमत और मग़फ़िरत का ज़रीआ हैं । नीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अवलाद बिल ख़ुसूस बेटियों की परवरिश के मुतअ़ल्लिक़ फ़ज़ाइल बयान फ़रमा कर उन की अहम्मिय्यत को भी ख़ूब उजागर फ़रमाया । चुनान्चे, बेटियों के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल चन्द अहादिषे मुबारका मुलाहज़ा फ़रमाइये ।

बेटियों के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल फ़रामीने मुस्तफ़ा

क़ियामत तक मदद की बिशारत

हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रहमत निशान है : जब किसी के हां बेटी की विलादत होती है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के घर फ़िरिश्तों को भेजता है, जो आ कर कहते हैं : ऐ घर वालो ! तुम पर सलामती हो । फिर फ़िरिश्ते अपने परों

से उस लड़की का इहाता कर लेते हैं और उस के सर पर हाथ फेर कर कहते हैं : एक कमज़ोर लड़की कमज़ोर औरत से पैदा हुई, जो इस की कफ़ालत करेगा क़ियामत तक उस की मदद की जाएगी।[1]

एक बेटी की परवरिश पर इन्आ़म

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस शख़्स की एक बेटी हो वोह उस को अदब सिखाए और अच्छा अदब सिखाए और उस को ता'लीम दे और अच्छी ता'लीम दे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस को जो ने'मतें अ़ता फ़रमाई हैं उन ने'मतों में से उस को भी दे तो उस की वोह बेटी उस के लिये दोज़ख़ की आग से सित्र और हिजाब (पर्दा) होगी।[2]

तीन बेटियों की परवरिश पर इन्आ़म

दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़फ़िय्यत निशान है : जिस शख़्स की तीन बेटियां हों और वोह उन पर सब्र करे, उन्हें खिलाए पिलाए और उन को अपनी कमाई से कपड़े पहनाए तो वोह लड़कियां उस के लिये दोज़ख़ की आग से हिजाब बन जाएंगी।[3]

---

1 المعجم الصغير، الجزء١، ١/ ٣٠

2 حلية الاولياء، ٥/ ٦٧، حديث: ٦٣٤٨

3 ابن ماجه، كتاب الادب، باب بر الوالد والاحسان الى البنات، ٤/ ١٨٩، حديث: ٣٦٦٩

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जन्नत वाजिब कर दी

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइ़शा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : मेरे पास एक मिस्कीन औ़रत अपनी दो बेटियों के साथ आई, मैं ने उस को तीन खजूरें दीं, उस ने एक एक खजूर दोनों बच्चियों को दी और एक खजूर खाने के लिये अपने मुंह की त़रफ़ ले जा रही थी कि उस की बेटियों ने उस से वोह खजूर भी मांग ली, उस ने वोह खजूर भी तोड़ कर दोनों बेटियों को खिला दी, मुझे इस पर तअ़ज्जुब हुवा फिर मैं ने रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस बात का तज़किरा किया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस (के इस फ़े'ल) के सबब उस औ़रत के लिये जन्नत वाजिब कर दी।[1]

बेटियों या बहनों की परवरिश पर इन्आ़म

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : जो शख़्स तीन बेटियों या बहनों की इस त़रह़ परवरिश करे कि उन को अदब सिखाए और उन पर मेहरबानी का बरताव करे यहां तक कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन्हें बे नियाज़ कर दे (या'नी वोह बालिग़ हो जाएं या उन का निकाह़ हो जाए या वोह साह़िबे माल हो जाएं) तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत वाजिब फ़रमा देता है। येह

1 مسلم، کتاب البر والصلة، باب فضل الاحسان الی البنات، ص ۱۴۱۵، حدیث: ۲۶۳۰

इरशादे नबवी सुन कर सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : अगर कोई शख़्स दो लड़कियों की परवरिश करे तो....? इरशाद फ़रमाया : उस के लिये भी येही अज्रो षवाब है यहां तक कि अगर लोग एक का ज़िक्र करते तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस के बारे में भी येही इरशाद फ़रमाते ।[1]

मक़ामे शुक्र

इस्लामी बहनों के लिये मक़ामे शुक्र है कि एक वक़्त वोह था जब दुन्या में इन का पैदा होना आ़र और ज़िल्लत व रुस्वाई समझा जाता था मगर इस्लामी ता'लीमात, कुरआनी आयात और नबवी इरशादात ने इन की अहम्मिय्यत उजागर कर के इस बात का शुऊ़र दिलाया कि बेटियां रह़मते खुदावन्दी के नुज़ूल का बाइ़ष हैं, लिहाज़ा इन की क़द्र करनी चाहिये । चुनान्चे, येही वजह है कि आज के इस पुर आशोब दौर में इस्लामी ता'लीमात से आरास्ता मां-बाप की तर्बिय्यत व तवज्जोह जहां बेटों को मुआ़शरे का एक बा इ़ज़्ज़त फ़र्द बनाने पर मरकूज़ है वहीं वोह बेटी की बेहतरीन परवरिश से भी ग़ाफ़िल नहीं । बल्कि बेटी की अ़ज़मत व अहम्मिय्यत के पेशे नज़र इस की इ़ज़्ज़त व इ़फ़्फ़त की हिफ़ाज़त के लिये इस्लाम ने जो इस की तर्बिय्यत के सुनहरी मदनी फूल अ़ता फ़रमाए हैं वोह इन्हें मताए़ जां समझते हैं ।

---

1 شرح السنة للبغوی، کتاب البر والصلة، باب ثواب کافل الیتیم، ۶/۴۵۲، حدیث: ۳۳۵۱

बेटी की परवरिश के मदनी फूल

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आज के नागुफ़्ता बेह हालात में इस्लामी ता'लीमात से दूरी और ग़ैर मुस्लिमों की अन्धी तक्लीद ने मुसलमानों को कहीं का नहीं छोड़ा, बद क़िस्मती से फ़ी ज़माना मुसलमानों के रहन सहन के तौर तरीक़े और रुसूमात इस्लामी ता'लीमात के सरासर ख़िलाफ़ नज़र आते हैं, ऐसे नामुसाइद हालात में अवलाद ख़ुसूसन बेटी की दुरुस्त इस्लामी तर्बिय्यत इन्तिहाई मुश्किल नज़र आती है। लिहाज़ा अगर हम अपनी बेटी की सहीह तर्बिय्यत करना चाहते हैं तो सब से पहले इस्लामी मा'लूमात हासिल करना ज़रूरी है ताकि इस्लामी ता'लीमात की रोशनी में हम सहीह मा'नों में अपने इस फ़र्ज़े मन्सबी की बजा आवरी कर सकें। क्यूंकि आज की बेटी कल किसी की बीवी और बहू होगी, फिर मां और बा'द में सास बनेगी, लिहाज़ा आज इस बेटी की तर्बिय्यत पर भरपूर तवज्जोह देना ज़रूरी है ताकि कल जब येह ख़ुद किसी की मां बने तो अपनी अवलाद की बेहतरीन तर्बिय्यत से गफ़्लत की मुर्तकिब न हो।

आइये ! चन्द ऐसे मदनी फूलों पर नज़र डालते हैं जो एक बेटी की पवरिश में बुन्यादी हैषिय्यत रखते हैं :

(1) बेटी की पैदाइश पर २द्दे अ़मल

बेटा पैदा हो या बेटी, हर हाल में शुक्र बजा लाना चाहिये क्यूंकि अगर बेटा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत है तो बेटी रह़मत।

दोनों ही प्यार और शफ़्क़त के मुस्तहिक़ हैं। दौरे जदीद में येह मुशाहदए आ़म है कि लड़के की विलादत पर जिस मसर्रत का इज़्हार होता है लड़की की विलादत पर इस का उ़श्रे अ़शीर भी नहीं होता। चूंकि दुन्यावी त़ौर पर लड़कियों से वालिदैन और ख़ानदान को बज़ाहिर कोई मन्फ़अ़त ह़ासिल नहीं होती शायद इसी लिये बा'ज़ नादान बेटियों की विलादत होने पर नाक भउ चढ़ाते हैं और बसा अवक़ात बच्ची की अम्मी को त़रह़ त़रह़ के त़ा'ने दिये जाते हैं, त़लाक़ की धमकियां दी जाती हैं बल्कि ऊपर तले बेटियां होने की सूरत में इस धमकी को अ़मली ता'बीर भी दे दी जाती है। ऐसों को चाहिये कि वोह गुज़श्ता सफ़ह़ात में बयान की गई रिवायात के इलावा दर्जे ज़ैल रिवायत पर भी ग़ौर करें कि जिस में बेटी की पैदाइश पर जन्नत की बिशारत से नवाज़ा गया है। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि दो जहां के ताजवर सुल्त़ाने बह्रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : जिस के हां बेटी पैदा हो और वोह न तो उसे ज़िन्दा दफ़्न करे न ह़क़ीर समझे और न ही उस पर बेटे को फ़ज़ीलत दे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।[1]

مدینہ

1 مستدرک، کتاب البر والصلۃ، ۵/۲۴۸، حدیث: ۷۴۲۸

(2) कान में अज़ान

बेटी की पैदाइश पर ग़मज़दा होने के बजाए ख़ुशी का इज़्हार करने के बा'द सब से पहला काम येह करना चाहिये कि उस के कानों में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी का पैग़ाम **अज़ान व इक़ामत** की सूरत में पहुंचाया जाए ताकि उस की रूह नूरे तौहीद से मुनव्वर और दिल इश्क़े मुस्तफ़ा की शम्अ़ से फ़रोज़ां (रोशन) हो जाए। ऐसा करना मुस्तहब और सुन्नत से षाबित है। चुनान्चे,

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ़ 22 सफ़्हात पर मुश्तमिल रिसाले "**अ़क़ीक़े के बारे में सुवाल जवाब**" सफ़्हा 7 पर है : "जब बच्चा पैदा हो तो मुस्तहब येह है कि उस के कान में अज़ान व इक़ामत कही जाए अज़ान कहने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बलाएं दूर हो जाएंगी। इमामे आ़ली मक़ाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन इब्ने अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जिस शख़्स के हां बच्चा पैदा हो उस के दाएं कान में अज़ान और बाएं कान में इक़ामत कही जाए तो बच्चा उम्मुस्सिब्यान से मह़फ़ूज़ रहेगा।[1]

مدینہ

1 مسند ابی یعلٰی، ۶/۳۲، حدیث: ۶۷۴۷

उम्मुस्सिब्यान के मुतअ़ल्लिक़ आ़शिक़ों के इमाम, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत, आ़शिक़े माहे नबुव्वत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : (सर्अ़) बहुत ख़बीष बला है और इसी को उम्मुस्सिब्यान कहते हैं अगर बच्चों को हो, वरना सर्अ़ (मिर्गी)।[1]

"नुज़हतुलक़ारी" में है : सर्अ़ के मा'ना बे होश हो कर गिर पड़ने के हैं येह कभी अख़्लात़[2] के फ़साद के सबब होता है जिसे मिर्गी कहते हैं और कभी जिन्न या ख़बीष हमज़ाद के अषर से होता है।[3] मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : जब बच्चा पैदा हो फ़ौरन सीधे कान में अज़ान व बाएं (उलटे) में तक्बीर कहे कि ख़ल्ले शैत़ान व उम्मुस्सिब्यान से बचे।[4] बेहतर येह है कि दहने (या'नी सीधे) कान में चार मरतबा अज़ान और बाएं (या'नी उलटे) कान में तीन मरतबा इक़ामत कही जाए। (अगर एक मरतबा अज़ान व इक़ामत कह दी तब भी कोई ह़रज नहीं) सातवें दिन उस का नाम रखा जाए और उस का सर मूंडा जाए और सर मूंडाने के वक़्त अ़क़ीक़ा

---

1 : मलफ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 417

2 : अख़्लात़, ख़ल्त़ की जम्अ़। जिस्म की चार ख़िल्तें (1) सफ़रा (या'नी पित) (2) ख़ून (3) बलग़म और (4) सौदा (जला हुवा सियाह बलग़म))

3 نزهة القاری، ۵/ ۴۸۹

4 فتاوی رضویہ، ۲۴/ ۴۵۲

किया जाए और बालों का वज़्न कर के उतनी चांदी या सोना सदक़ा किया जाए ।[1] बहुत लोगों में येह रवाज है कि लड़का पैदा होता है तो अज़ान कही जाती है और लड़की पैदा होती है तो नहीं कहते । येह न चाहिये बल्कि लड़की पैदा हो जब भी अज़ान व इक़ामत कही जाए ।[2]

(3) तह्नीक

तह्नीक या'नी घुट्टी देने के मुतअ़ल्लिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़करिया यह्या बिन शरफ़ नववी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى शर्हे सहीह़ मुस्लिम में फ़रमाते हैं : तमाम उ़-लमाए किराम का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि बच्चा पैदा होने के बा'द खजूर (या किसी मीठी चीज़) की घुट्टी देना मुस्तह़ब है, अगर खजूर न हो तो जो भी मीठी चीज़ मयस्सर हो उस से घुट्टी दी जा सकती है । इस का त़रीक़ा येह है कि घुट्टी देने वाला खजूर को अपने मुंह में ख़ूब चबा कर नर्म करे कि उसे निगला जा सके फिर वोह बच्चे का मुंह खोल कर उस में रख दे । मुस्तह़ब येह है कि घुट्टी देने वाला नेक और मुत्तक़ी व परहेज़गार हो, ख़्वाह वोह मर्द हो या औ़रत । अगर ऐसा कोई शख़्स पास मौजूद न हो तो नौ मौलूद को तह्नीक की ख़ात़िर किसी नेक

---

1 : बहारे शरीअ़त, 3/355

2 المرجع السابق

शख़्स के पास ले जाया जा सकता है ।[1] जैसा कि उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से मरवी है कि लोग अपने (नौज़ाईदा) बच्चों को ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में लाया करते थे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन के लिये ख़ैरो बरकत की दुआ फ़रमाते और तह़नीक फ़रमाया करते थे ।[2]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان के मा'मूल से भी मा'लूम होता है कि बच्चों बिल ख़ुसूस बेटी की तह़नीक सालेह़ व मुत्तक़ी मुसलमानों से करवाई जाए ताकि नेक लोगों की दुआएं और बरकात उस की घुट्टी में शामिल हों ।

(4) अच्छा नाम रखना

मां–बाप की त़रफ़ से चूंकि बच्चे के लिये सब से पहला और बुन्यादी तोह़फ़ा येह होता है कि वोह उस का ख़ूब सूरत व बा बरकत नाम रखें ताकि येह तोह़फ़ा उ़म्र भर उसे मां–बाप की शफ़्क़तों और मेहरबानियों की याद दिलाता रहे, यहां तक कि मैदाने महशर में भी अपने वालिदैन के अ़त़ा कर्दा इसी नाम से बारगाहे ख़ुदावन्दी में ह़ाज़िरी के लिये बुलाया जाए ।

---

1 شرح صحیح مسلم، کتاب الادب، باب استحباب تحنیک المولود، الجزء الرابع عشر، ۷/ ۱۲۲

2 مسلم، کتاب الادب، باب استحباب تحنیک المولود... الخ، ص ۱۱۸۴، حدیث: ۲۱۴۷

जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन तुम अपने और अपने बापों के नामों से पुकारे जाओगे, लिहाज़ा अच्छे नाम रखा करो।(1)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा बच्चों बिल ख़ुसूस बेटियों के नाम रखने में इन्तिहाई एह़तियात़ से काम लेना चाहिये और उन का नाम ऐसा होना चाहिये कि दुन्या व आख़िरत में उन्हें कहीं शर्मसार न होना पड़े, इस लिये कि बसा अवक़ात मसाइले शरइ़य्या से नावाक़िफ़ होने की वजह से लोग बेटियों के नाम मा'रूफ़ कुफ़्फ़ार ख़वातीन के नाम पर रख देते हैं या नए नए नाम रखने की दौड़ में ऐसे नाम रख देते हैं जो बे मा'ना होते हैं या उन का मा'ना अच्छा नहीं होता, ऐसे तमाम नाम रखने से बचना चाहिये।(2) जैसा कि **बहारे शरीअ़त** में है : ऐसा नाम रखना जिस का ज़िक्र न क़ुरआने मजीद में आया हो न ह़दीषों में हो न मुसलमानों में ऐसा नाम मुस्ता'मल हो, इस में उ़-लमा को इख़्तिलाफ़ है बेहतर येह है कि न रखे।(3) लिहाज़ा चाहिये कि बेटियों के नाम उम्महातुल मोअमिनीन, सह़ाबिय्यात व सालिह़ात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ के अस्माए

---

1 ابو داود، کتاب الادب، باب فی تغییر الاسماء، ۴/۳۷۴، حدیث: ۴۹۴۸

2 : नाम रखने के ह़वाले से जामेअ़ मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये मक्तबतुल मदीना की 189 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**नाम रखने के अह़काम**" का ज़रूर मुत़ालआ़ फ़रमाइये।

3 : बहारे शरीअ़त, 3/603

मुबारका पर ही रखे जाएं। इस का एक फ़ाइदा तो येह होगा कि आप की बेटी का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बरगुज़ीदा व नेक ख़वातीन से रूहानी तअ़ल्लुक़ क़ाइम हो जाएगा और दूसरा इन नेक हस्तियों से मौसूम होने की बरकत से उस की ज़िन्दगी पर मदनी अषरात मुरत्तब होंगे। अगर आप ने अपनी बेटी का नाम रखते वक़्त इन मदनी फूलों को मद्दे नज़र नहीं रखा था तो परेशान मत हों बल्कि फ़ौरन उन का नाम तब्दील कर दीजिये। चुनान्चे,

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बुरे नामों को बदल दिया करते थे।[1] और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना जुवैरिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का नाम पहले बर्रा (नेकी) था, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बदल कर जुवैरिय्या रख दिया।[2] नाम रखने में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़करिया यह़्या बिन शरफ़ नववी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی का अ़ता कर्दा येह मदनी फूल हमेशा याद रखना चाहिये कि बच्चे का नाम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के किसी बरगुज़ीदा बन्दे (मषलन पीरो मुर्शिद वग़ैरा) से रखवाना मुस्तह़ब है और जिस दिन बच्चा पैदा हो उसी दिन नाम रखना भी जाइज़ है।[3]

---

1. ترمذی، کتاب الآداب، باب ماجاء فی تغییر الاسماء، ۴/ ۳۸۲، حدیث: ۲۸۴۸
2. مسلم، کتاب الادب، باب استحباب تغییر الاسم القبیح، ص ۱۱۸۲، حدیث: ۲۱۴۰
3. شرح صحیح مسلم، کتاب الادب، باب استحباب تحنیک المولود، الجزء الرابع عشر، ۷/ ۱۲۴

(5) बाल मुंडवाना व अ़क़ीक़ा करना

सातवें दिन बाल मुंडवा कर इन के वज़्न बराबर चांदी सदक़ा करना चाहिये, नीज़ अ़क़ीक़ा भी उसी दिन कर देना चाहिये। चुनान्चे, आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ में फ़रमाते हैं : सातवें और न हो सके तो चौदहवें वरना इक्कीसवें दिन अ़क़ीक़ा करे, दुख़्तर (बेटी) के लिये एक, पिसर (बेटे) के लिये दो (बकरिया) कि इस में बच्चे का गोया रहन से छुड़ाना है।(1)

"**अ़क़ीक़े के बारे में सुवाल जवाब**" सफ़ह़ा **4** पर है : "जिस बच्चे ने अ़क़ीक़े का वक़्त पाया या'नी वोह बच्चा सात दिन का हो गया और बिला उ़ज़्र जब कि इस्तित़ाअ़त (या'नी त़ाक़त) भी हो उस का अ़क़ीक़ा न किया गया तो वोह अपने मां बाप की शफ़ाअ़त न करेगा। ह़दीषे पाक में है कि اَلْغُلَامُ مُرْتَهَنٌ بِعَقِيْقَتِهٖ या'नी "लड़का अपने अ़क़ीक़े में गिरवी है।"(2) अशिअ़्अ़तुल्लमआ़त में है, इमाम अह़मद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "बच्चे का जब तक अ़क़ीक़ा न किया जाए उस के वालिदैन के ह़क़ में शफ़ाअ़त करने से रोक दिया जाता है।"(3)

مــــــــــــــــــــــدينه

1. فتاویٰ رضویہ، ۲۴/ ۴۵۲
2. ترمذی، کتاب الاضاحی، باب من العقیقۃ، ۳/ ۱۷۷، حدیث: ۱۵۲۷
3. اشعۃ اللّمعات، ۳/ ۵۱۲

सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی मज़कूरा ह़दीषे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : "गिरवी" होने का मत़लब येह है कि उस से पूरा नफ़्अ़ ह़ासिल न होगा जब तक अ़क़ीक़ा न किया जाए और बा'ज़ (मुह़द्दिषीन) ने कहा बच्चे की सलामती और उस की नश्वो नुमा (फलना फूलना) और उस में अच्छे अवसाफ़ (या'नी उ़म्दा ख़ूबियां) होना अ़क़ीक़े के साथ वाबस्ता हैं।[1]

(6) रिज़्क़े ह़लाल खिलाना

दौरे जदीद में महंगाई ने चूंकि हर कसो नाकस की कमर तोड़ कर रख दी है, लिहाज़ा येह बात आ़म देखी गई है कि ज़रूरियात की तक्मील और आसाइशों के ह़ुसूल के लिये बसा अवक़ात ह़राम व ह़लाल कमाई की परवाह नहीं की जाती और येह बात यक्सर फ़रामोश कर दी जाती है कि ह़राम कमाई दुन्या व आख़िरत में अ़ज़ीम ख़सारे का बाइ़ष है। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : वोह गोश्त हरगिज़ जन्नत में दाख़िल न होगा जो ह़राम में पला बढ़ा।[2]

---

1 : बहारे शरीअ़त, 3/354

2 سنن الدارمی، کتاب الرقاق، باب فی اکل السحت، ۲/۴۰۹، حدیث: ۲۷۷۶

पस हमेशा रिज़्क़े ह़लाल कमा कर अपनी अवलाद की परवरिश करने की कोशिश कीजिये कि जो शख़्स इस लिये ह़लाल कमाई करता है कि सुवाल करने से बचे, अहलो इ़याल के लिये कुछ ह़ासिल करे और पड़ोसी के साथ हुस्ने सुलूक करे तो वोह क़ियामत में इस त़रह़ आएगा कि उस का चेहरा चौदहवीं के चांद की त़रह़ चमकता होगा।[1]

(7) अच्छी बातें सिखाना

औ़रतों के मुतअ़ल्लिक़ चूंकि येह बात बड़ी मा'रूफ़ है कि वोह फ़ुज़ूल गोई की आ़दी होती हैं, लिहाज़ा अपनी बेटी को फ़ुज़ूल गोई वग़ैरा से बचाने की अच्छी अच्छी निय्यतों से कोशिश कीजिये कि जब वोह ज़रा होशियार हो जाए और ज़बान खोलने लगे तो सब से पहले उस की पाको साफ़ ज़बान से इस्मे जलालत "**अल्लाह**" और कलिमए त़य्यिबा ही जारी हो। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि हुज़ूरे पाक साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अपने बच्चों की ज़बान से सब से पहले لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ कहलवाओ।[2] चुनान्चे, पन्दरहवीं सदी की अ़ज़ीम इ़ल्मी व रूह़ानी शख़्सिय्यत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना

---

1 شعب الایمان، باب فی الزھد وقصر الامل، ۷/۲۹۸، حدیث: ۱۰۳۷۵

2 شعب الایمان، باب فی حقوق الاولاد والاھلین، ۶/۳۹۷، حدیث: ۸۶۴۹

अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपनी नवासी के लिये सब घर वालों को कह रखा था कि इस के सामने "**अल्लाह अल्लाह**" का ज़िक्र करते रहें ताकि इस की ज़बान से पहला लफ़्ज़ "**अल्लाह**" निकले और जब वोह आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में लाई जाती तो आप ख़ुद भी उस के सामने ज़िक्रुल्लाह करते। चुनान्चे, जब आप की नवासी ने बोलना शुरूअ़ किया तो पहला लफ़्ज़ "**अल्लाह**" ही बोला।

(8) ता'लीम और इस्लामी तर्बिय्यत

दौरे ह़ाज़िर में अगर मुआ़शरे का बग़ौर जाइज़ा लें तो हर त़रफ़ दो ही चीज़ें नज़र आती हैं। जदीद ता'लीम व तरक़्क़ी और नाम निहाद रोशन मुस्तक़बिल के नाम पर एक त़रफ़ मग़रिबी तहज़ीब (Western culture) से मा'मूर मुख़्तलिफ़ (Different) ख़ूब सूरत (Beautiful) और दिल आवेज़ (Attractive) नामों के साथ शहर शहर बल्कि गली गली खुले हुवे स्कूल्ज़ (Schools) नज़र आते हैं जिन की एक कषीर ता'दाद इस्लाम दुश्मन कुव्वतों के ज़ेरे असर मज़हब व मिल्लत की कुयूद से आज़ाद मुआ़शरे के ह़ामिल लोग तय्यार करने में मगन है तो दूसरी त़रफ़ हर जगह बिल ख़ुसूस बड़े शहरों के पोश अ़लाक़ों, हाऊसिंग सोसाइटीज़ (Housing Societies) वी आई पी पॉप्यूलेशन ऐरियाज़ (V.I.P. Population Areas) अपर क्लास रेसीडेनशल ऐरियाज़

(Upper class residential areas) में इस्लामिक स्कूल्ज़ (Islamic Schools) के नाम पर बद मज़हबों के बनाए गए इदारे व जामिआ़त हमारी आने वाली नस्लों के ईमान और दीनी ह़मिय्यत व ग़ैरत के लिये शदीद ख़त़रात का बाइ़ष बन रहे हैं।

लिहाज़ा ज़रूरत इस अम्र की है कि इ़श्क़े रसूल से सरशार मुआ़शरे की तश्कील के लिये मदनी तर्बिय्यत का एक ऐसा मज़बूत व मरबूत़ लाइह़ए अ़मल इख़्तियार किया जाए जिस से दौरे जदीद के नौजवानों की फ़िक्रो सोच में तब्दीली आने के साथ साथ न सिर्फ़ उन का रुख़ सूए मदीना हो जाए बल्कि उन का सीना ही मदीना बन जाए। जिस के लिये सब से पहली सीढ़ी येह है कि आज की इस नन्ही मुन्नी कली की तूफ़ाने बादो बारां से ह़िफ़ाज़त की जाए कि आज जिस की मुस्कुराहट मां-बाप को ग़मों से दूर कर देती है, कल जब पूरी त़रह़ खिल कर किसी के गुलिस्ताने ह़यात में महके तो चारों त़रफ़ फ़ज़ा ख़ुशगवार हो जाए। येह बहुत ज़रूरी है कि हम अपनी आइन्दा नस्लों बिल ख़ुसूस बेटियों को इ़फ़्फ़त व इ़स्मत का पैकर बनाने, तौह़ीद व रिसालत से रूशनास कराने और इस्लाम के नाम पर तन मन धन क़ुरबान कर देने के लिये तय्यार करें ताकि आ़शिक़ाने रसूल की इ़श्क़ो मस्ती से भरपूर दास्तानें क़िस्सए पारीना (माज़ी की कोई दास्तान) बनने के बजाए दौरे जदीद में ह़क़ीक़त का रूप धार सकें और इस के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी

तह़रीक दा'वते इस्लामी के महके महके और पाकीज़ा व मुअ़त्त़र व मुअ़म्बर मदनी माह़ोल से बेहतर कोई माह़ोल नहीं ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप का तअ़ल्लुक़ ज़िन्दगी के जिस भी शो'बे से हो फ़िक्र न कीजिये दा'वते इस्लामी आप को हर जगह और ज़िन्दगी के हर मोड़ पर रहनुमाई फ़राहम करती नज़र आएगी, मषलन ढ़ाई साल की उ़म्र में अपनी बेटी को जदीद दुन्यवी ता'लीम के साथ साथ फ़र्ज़ इल्मे दीन सिखाने के लिये **दारुल मदीना** में दाख़िल करवाइये या फिर थोड़ी बड़ी उ़म्र की हो तो उसे कुरआने करीम नाज़िरा व ह़िफ़्ज़ करवाने के लिये **मद्रसतुल मदीना लिलबनात** और इल्मे दीन की तरवीजो इशाअ़त के लिये **जामिअ़ातुल मदीना लिलबनात** में दाख़िल करवा दीजिये ।

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : बचपन से जो आ़दत पड़ती है कम छूटती है ।[1] लिहाज़ा जो लोग एक बेटी की ता'लीम व तर्बिय्यत में कोताही के मुर्तकिब होते हैं दर ह़क़ीक़त वोह आने वाली नस्ल की ता'लीमो तर्बिय्यत में कोताही के मुर्तकिब होते हैं । चुनान्चे, एक बेटी की परवरिश के दौरान ता'लीमो तर्बिय्यत के जिन मराह़िल से

1 فتاوی رضویہ، ۲۲/۲۱۵

दोचार होना पड़ता है, अगर इन पर ग़ौर किया जाए तो मा'लूम होगा कि ता'लीमो तर्बिय्यत अगर्चे लाज़िम व मल्ज़ूम हैं मगर इन पर त़ाइराना नज़र डालने से सूरत कुछ यूं बनती है :

(1) बुन्यादी व ज़रूरी अ़क़ाइद की ता'लीम

त़ाग़ूती त़ाक़तें आ़शिक़ाने रसूल को सफ़्हए हस्ती से मिटाने के लिये उन के अ़क़ीदे और अ़मल को बरबाद करने की हर मुमकिन कोशिश में मसरूफ़ हैं और इस सिलसिले में उन्हें बा'ज़ बद बातिन लोगों की भी भरपूर मदद ह़ासिल है। ग़ैर मुस्लिम कुव्वतों की मुसलमानों को मिटाने और पाकीज़ा इस्लामी ता'लीमात को बिगाड़ने की इन नापाक साज़िशों का ही नतीजा है कि इस पुरफ़ितन दौर में गुनाहों की यलग़ार और फ़ेशन परस्ती की फिटकार ने मुसलमानों की अकषरिय्यत को बे अ़मल बना दिया है, इल्मे दीन से बे रग़बती और हर ख़ासो आ़म का रुजह़ान सिर्फ़ दुन्यावी ता'लीम की त़रफ़ है, दीनी मसाइल से नावाक़िफ़िय्यत की बिना पर हर त़रफ़ जहालत के बादल मन्डला रहे हैं, लादीनिय्यत व बद मज़्हबिय्यत के ठाठें मारते सैलाब में मुसलमान तेज़ी के साथ बद अख़्लाक़ी के अ़मीक़ गढ़े में गिरते जा रहे हैं। चुनान्चे, इन नाज़ुक ह़ालात में आ़शिक़ाने रसूल के कानों तक ज़िक्रे ख़ुदा व मुस्त़फ़ा की पुरसोज़ आवाज़ें पहुंचाने के लिये ज़रूरी है कि आज की बेटी और कल की मां की ऐसी भरपूर मदनी तर्बिय्यत की जाए कि आने वाली नस्ल

इश्क़े रसूल के रंग में रंग जाए। मां की गोद चूंकि बच्चे की पहली दर्सगाह होती है लिहाज़ा एक बेटी की सह़ीह़ मा'नों में मदनी तर्बिय्यत करने के लिये ज़रूरी है कि मां ख़ुद भी ज़रूरी उ़लूमे दीनिय्या से आगाह हो ताकि वोह अपनी बेटी को इब्तिदाई उ़म्र से ही तौह़ीद व रिसालत के इश्क़ो मस्ती से भर पूर जाम पीने का ऐसा आ़दी बना दे कि जिस की लज़्ज़त में गुम हो कर उसे ज़िन्दगी भर किसी दूसरी त़रफ़ देखने का होश ही न रहे। चुनान्चे, उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों, आस्मानी किताबों, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام बिल ख़ुसूस नबियों के सरदार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़ियामत और जन्नत व दोज़ख़ के मुतअ़ल्लिक़ बतदरीज बुन्यादी अ़क़ाइद सिखाइये। मषलन

तौह़ीदे बारी तआ़ला के मुतअ़ल्लिक़ बुन्यादी अ़क़ाइद : हमें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने पैदा किया है, वोही हमें रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाता है, उसी ने ज़िन्दगी दी है, वोही मौत देगा, हम सिर्फ़ उसी की इबादत करते हैं, वोह जिस्म, जगह और मकान से पाक है (बा'ज़ मां-बाप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम लेने पर अपने बच्चे को आस्मान की त़रफ़ उंगली उठाना सिखाते हैं, ऐसा न किया जाए), वोह किसी का मोह़ताज नहीं बल्कि सारी काइनात उस की मोह़ताज है, वोह अवलाद से पाक है, वोह हमेशा से है और हमेशा रहेगा, जो कुछ हो चुका है, जो हो रहा है या होगा वोह सब जानता है।

फ़िरिश्तों के मुतअ़ल्लिक़ बुन्यादी अ़क़ाइद : फ़िरिश्ते उस की नूरी मख़्लूक़ हैं जो उस के हुक्म से मुख़्तलिफ़ काम सर अन्जाम देते हैं। मषलन बारिश बरसाना, हवा चलाना, किसी की रूह निकालना वग़ैरा।

आस्मानी किताबों के मुतअ़ल्लिक़ बुन्यादी अ़क़ाइद : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने बन्दों की हिदायत के लिये बहुत से सहीफ़े और किताबें नाज़िल फ़रमाईं जिन में चार किताबें बहुत मश्हूर हैं :

(1) तौरात (येह ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर नाज़िल हुई)

(2) ज़बूर (येह ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ السَّلَام पर नाज़िल हुई)

(3) इन्जील (येह ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام पर नाज़िल हुई)

(4) क़ुरआने करीम (येह हमारे नबी मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर नाज़िल हुई)

अम्बियाए किराम के मुतअ़ल्लिक़ बुन्यादी अ़क़ाइद : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मख़्लूक़ की रहनुमाई के लिये अपने नबियों और रसूलों को भेजा जिन की मुकम्मल ता'दाद वोही जानता है और सब से आख़िर में हमारे नबी मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को भेजा। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के आख़िरी नबी हैं, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द कोई नबी नहीं आएगा।

क़ियामत और जन्नत व दोज़ख़ के मुतअ़ल्लिक़ बुन्यादी अ़क़ाइद : क़ियामत से मुराद येह है कि एक वक़्त आएगा कि येह आस्मानो ज़मीन सब तबाह हो जाएंगे, फिर मुर्दे अपनी क़ब्रों से उठ कर मैदाने मह़शर में बारगाहे ख़ुदावन्दी में ह़ाज़िर होंगे और अपने आ'माल का

हिसाब देंगे, जिस के अमल अच्छे होंगे उसे जन्नत मिलेगी और जिस के बुरे होंगे उसे दोज़ख़ में जाना पड़ेगा। जन्नत का शौक़ और जहन्नम का ख़ौफ़ पैदा करने के लिये बेटी की समझ बूझ के मुताबिक़ इन्आमाते जन्नत और अज़ाबाते जहन्नम की रिवायात सुनाइये और उसे बताइये कि अगर हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इताअत करेंगे तो हमें जन्नत मिलेगी और अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी में ज़िन्दगी बसर की तो जहन्नम का अज़ाब हमारा मुन्तज़िर होगा। وَالْعِيَاذُ بِاللّٰه[1]

ज़िक्रे मुस्तफ़ा चूंकि नूरे ईमान व सुरूरे जान है। इस लिये चाहिये कि ऐसे अस्बाब पैदा किये जाएं कि आप की बेटी के दिल में दुरूदे पाक और ना'त शरीफ़ पढ़ने और सुनने का ज़ौक़ो शौक़ पैदा हो जाए। मषलन बच्चे को सुलाने या बहलाने के लिये लोरी देने का रवाज आम है लेकिन लोरी देते वक़्त ख़याल रखा जाए कि येह बे मआनी कलिमात पर मुश्तमिल न हो और न ही इस में कोई ग़ैर शरई कलिमा हो बल्कि बेहतर येह है कि हम्द या ना'त या औलियाए किराम की मन्क़बत बच्चे को सुनाई जाए तो षवाब भी

---

1 येह अक़ाइद बहारे शरीअत के पहले हिस्से से माख़ूज़ हैं। चुनान्चे, अक़ाइद की मज़ीद मा'लूमात के लिये सदरुल अफ़ाज़िल की आसान तस्नीफ़ **किताबुल अक़ाइद,** सदरुश्शरीआ की **बहारे शरीअत** हिस्सए अव्वल का मुतालआ करने के लिये मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन हासिल कीजिये। नीज़ अमीरे अहले सुन्नत की किताब **कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब** के इलावा **मदनी निसाब बराए क़ाइदा, बराए नाज़िरा** नीज़ **गुलदस्तए अक़ाइदो आ'माल** का भी ज़रूर मुतालआ कीजिये।

मिलेगा और बच्चे को नींद भी आ जाएगी। इस के इ़लावा सालिह़ीन व सालिह़ात के वाक़िआ़त कहानियों की सूरत में सुनाना भी मुफ़ीद है, क्यूंकि अस्लाफ़ से अ़क़ीदत व मह़ब्बत का तअ़ल्लुक़ ईमान की मज़बूत़ी का ज़रीआ़ है और बच्चों के दिल में सह़ाबए किराम व अहले बैते अ़त़हार عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और दीगर औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की अ़क़ीदत पैदा करने का आसान ज़रीआ़ इन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या की सीरत के नूरानी वाक़िआ़त भी हैं। नीज़ एक मुसलमान के लिये चूंकि उस का ईमान मताए़ ह़यात की ह़ैषिय्यत रखता है, लिहाज़ा आइन्दा नस्लों के इमान को मह़फ़ूज़ रखने के लिये बेटे से बढ़ कर बेटी के ईमान की ह़िफ़ाज़त की फ़िक्र दीगर तमाम दुन्यावी अश्या से कहीं ज़ियादा होनी चाहिये और ईमान की ह़िफ़ाज़त का एक बहुत बड़ा ज़रीआ़ किसी पीरे कामिल से बैअ़त हो जाना भी है, फ़ी ज़माना किसी जामेए़ शराइत़ पीरे कामिल का मिलना ना मुमकिन नहीं तो मुश्किल ज़रूर है लिहाज़ा अगर आप किसी के मुरीद नहीं तो फ़ौरन अपने बच्चों समेत सिलसिलए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्त़ारिय्या के अ़ज़ीम बुज़ुर्ग शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मुरीद बन जाएं। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه क़ुत़्बे मदीना, मेज़बाने मेहमानाने मदीना, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ियाउद्दीन अह़मद मदनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِي के मुरीद और ख़लीफ़ए क़ुत़्बे मदीना ह़ज़रते

मौलाना अ़ब्दुस्सलाम क़ादिरी रज़वी, शारहे बुख़ारी फ़क़ीहे आ'ज़मे हिन्द ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी, जानशीने क़ुत़्बे मदीना ह़ज़रते अ़ल्लामा फ़ज़्लुर्रह़मान क़ादिरी और मुफ़्तिये आ'ज़म पाकिस्तान ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती वक़ारुद्दीन रज़वी (رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْهِم) के ख़लीफ़ए मजाज़ हैं। इन के इ़लावा दीगर बुज़ुर्गों से भी ख़िलाफ़तें और इजाज़ते असानीदे अह़ादीष ह़ासिल हैं। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه सिलसिलए क़ादिरिय्या में मुरीद फ़रमाते हैं। और क़ादिरी सिलसिले की अ़ज़मत के क्या कहने कि इस के अ़ज़ीम पेशवा ह़ुज़ूर सय्यिदुना ग़ौषुल आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم क़ियामत तक के लिये ब फ़ज़्ले ख़ुदा अपने मुरीदों के तौबा पर मरने के ज़ामिन हैं।(1)

(2) क़ुरआनो सुन्नत की ता'लीम

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबी त़ालिब كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم से मरवी है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अपनी अवलाद को 3 बातें सिखाओ (1) अपने नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत (2) अहले बैत عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की मह़ब्बत और (3) तिलावते क़ुरआने करीम, क्यूंकि क़ुरआन पढ़ने वाले लोग, अम्बिया व अस्फ़िया के साथ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सायए रह़मत में होंगे जिस दिन उस के इ़लावा कोई साया न होगा।"(2)

---

1 بهجة الاسرار، ذكر فضل اصحابه وبشراهم، ص ١٩١

2 الجامع الصغير، ص ٢٥، حديث: ٣١١

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू मुहम्मद सहल तुस्तरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : ईमान की अ़लामत महब्बते बारी तआ़ला, महब्बते बारी तआ़ला की अ़लामत महब्बते कलामे बारी तआ़ला, महब्बते कलामे बारी तआ़ला की अ़लामत महब्बते महबूबे बारी तआ़ला और महब्बते महबूबे बारी तआ़ला की अ़लामत इत्तिबाए़ महबूबे बारी तआ़ला है ।[1]

पस बुन्यादी व ज़रूरी अ़क़ाइद के इलावा बेटी के दिल में कुरआनो सुन्नत की महब्बत पैदा करना ज़रूरी है ताकि बचपन ही से बारी तआ़ला व महबूबे बारी तआ़ला की महब्बत उस के दिल में पैदा हो जाए और कुरआनो सुन्नत के मुताबिक़ वोह अपनी सारी ज़िन्दगी गुज़ार दे क्यूंकि कुरआनो सुन्नत पर अ़मल ही दोनों जहां में कामयाबी का सबब है मगर याद रखिये ! कुरआने करीम पर अ़मल करने के लिये इसे सहीह पढ़ना, सीखना और समझना ज़रूरी है, मगर अफ़्सोस सद अफ़्सोस ! मख़्लूक़े ख़ुदा रब عَزَّوَجَلَّ के कलाम को पढ़ने, सीखने, समझने और इस पर अ़मल करने से बतदरीज दूर होती जा रही है और दुन्यावी तरक़्क़ी व ख़ुशहाली के लिये हर वक़्त नित नए उ़लूम व फ़ुनून सीखने सिखाने में मस्रूफ़ है । हालांकि इस की ता'लीम के मुतअ़ल्लिक़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

1 قوت القلوب، الفصل السابع عشر، ۱/ ۱۰۴

خَیْرُکُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْاٰنَ وَعَلَّمَہٗ या'नी तुम में से बेहतरीन शख़्स वोह है जो कुरआन सीखे और दूसरों को सिखाए।[1] चुनान्चे वालिदैन पर लाज़िम है कि बेटी की परवरिश में कुरआनो सुन्नत की महब्बत उस के सिने में कूट कूट कर भर दें।

(3) फ़र्ज़ उ़लूम और दीनी ता'लीम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़र्ज़ उ़लूम और दीनी ता'लीम की अहम्मिय्यत के मुतअ़ल्लिक़ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 505 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **ग़ीबत की तबाहकारियां** के सफ़ह़ा 5 पर फ़रमाते हैं : सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِیْضَۃٌ عَلٰی کُلِّ مُسْلِمٍ या'नी इ़ल्म ह़ासिल करना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है।[2] यहां स्कूल कॉलेज की दुन्यवी ता'लीम नहीं बल्कि ज़रूरी दीनी इ़ल्म मुराद है, लिहाज़ा सब से पहले बुन्यादी अ़क़ाइद का सीखना फ़र्ज़ है, इस के बा'द नमाज़ के फ़राइज़ व शराइत़ व मुफ़्सिदात, फिर रमज़ानुल मुबारक की तशरीफ़ आवरी पर फ़र्ज़ होने की सूरत में रोज़ों के ज़रूरी मसाइल,

---

1 بخاری، کتاب فضائل القرآن، باب خیرکم من تعلم ... الخ، ۳/ ۴۱۰، حدیث: ۵۰۲۷

2 ابن ماجه، کتاب السنة، باب فضل العلماء ... الخ، ۱/ ۱۴۶، حدیث: ۲۲۴

जिस पर ज़कात फ़र्ज़ हो उस के लिये ज़कात के ज़रूरी मसाइल, इसी त़रह़ ह़ज फ़र्ज़ होने की सूरत में ह़ज के, निकाह़ करना चाहे तो उस के, ताजिर को ख़रीदो फ़रोख़्त के, नोकरी करने वाले को नोकरी के, नोकर रखने वाले को इजारे के, وَعلٰی ھٰذَا الْقِیاس (या'नी और इसी पर क़ियास करते हुवे) हर मुसलमान आ़क़िल व बालिग़ मर्द व औ़रत पर उस की मौजूदा ह़ालत के मुत़ाबिक़ मस्अले सीखना फ़र्ज़े ऐ़न है। इसी त़रह़ हर एक के लिये मसाइले ह़लालो ह़राम भी सीखना फ़र्ज़ है। नीज़ मसाइले क़ल्ब (बात़िनी मसाइल) या'नी फ़राइज़े क़ल्बिय्या (बात़िनी फ़राइज़) मषलन आ़जिज़ी व इख़्लास और तवक्कुल वग़ैरा और इन को ह़ासिल करने का त़रीक़ा और बात़िनी गुनाह मषलन तकब्बुर, रियाकारी, ह़सद वग़ैरह़ा और इन का इ़लाज सीखना हर मुसलमान पर अहम फ़राइज़ से है। मोहलिकात या'नी हलाकत में डालने वाली चीज़ों जैसा कि झूट, ग़ीबत, चुग़ली, बोहतान वग़ैरा के बारे में ज़रूरी मा'लूमात ह़ासिल करना भी फ़र्ज़ है ताकि इन गुनाहों से बचा जा सके।[1]

इमामे अजल्ल ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू त़ालिब मक्की عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : अ़मल से पहले इ़ल्म ज़रूरी है क्यूंकि अ़मल के फ़र्ज़ होने की वजह से इस का इ़ल्म ह़ासिल करना भी फ़र्ज़ हो जाता है।[2]

---

1 ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 1

2 قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، ۱/ ۲۲۶

आदाबे ज़िन्दगी

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बेटी की परवरिश के दौरान कुरआनो सुन्नत और कुतुबे अस्लाफ़ (बुज़ुर्गों की किताबों) में बयान कर्दा जिन आदाब की ज़रूरत पेश आ सकती है अगर इन का मुत़ालआ़ किया जाए तो हम इन्हें तीन मुख़्तलिफ़ हिस्सों में कुछ यूं तक़्सीम कर सकते हैं :

- ज़ात से मुतअ़ल्लिक़ आदाब
- ख़ान्दान से मुतअ़ल्लिक़ आदाब
- मुआ़शरे से मुतअ़ल्लिक़ आदाब

ज़ात से मुतअ़ल्लिक़ आदाब

पाकीज़गी व त़हारत को एक मुसलमान की ज़िन्दगी में जो अहम्मिय्यत ह़ासिल है इस से इन्कार मुमकिन नहीं । जैसा कि फ़रमाने बारी तआ़ला है :

وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ ﴿۱۰۸﴾

(پ۱۱، التوبة:۱۰۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और सुथरे अल्लाह को प्यारे हैं ।*

नीज़ एक फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है कि पाकीज़गी निस्फ़ ईमान है।[1] और येह मरवी है कि بُنِيَ الدِّيْنُ عَلَى النَّظَافَة या'नी दीन की बुन्याद पाकीज़गी पर है।[2] यहां त़हारत से सिर्फ़ कपड़ों का साफ़ होना ही मुराद नहीं बल्कि दिल की सफ़ाई भी मुराद है, इस लिये कि नजासत सिर्फ़ बदन या कपड़ों के साथ ख़ास नहीं बल्कि बात़िन की सफ़ाई भी शरीअ़त को मत़लूब है क्यूंकि जब तक बात़िन पाक न हो इल्मे नाफ़ेअ़ (नफ़्अ़ बख़्श इल्म) ह़ासिल नहीं होता और न ही इन्सान इल्म के नूर से रोशनी पा सकता है, लिहाज़ा बेटी की परवरिश के दौरान वालिदैन पर लाज़िम है कि वोह बेटी के ज़ाहिर की पाकी व त़हारत का एहतिमाम करने के साथ साथ उस के बात़िन की पाकीज़गी पर भी भरपूर तवज्जोह दें ताकि उस का दिल बुरी सिफ़ात से पाक रहे। मषलन ह़सद, तकब्बुर, रियाकारी, उ़जब व ख़ुद पसन्दी, झूट, ग़ीबत, चुग़ली, गाली गलोच, अमानत में ख़ियानत, बद अ़हदी वग़ैरा और इन के दुन्या व आख़िरत में नुक़्सानात से ख़ूब आगाह करें ताकि बेटी इन हलाक कर देने और जहन्नम में ले जाने वाले गुनाहों से बच सके। मगर याद रखिये ! तर्बिय्यत उस वक़्त ही फ़ाइदा देगी जब आप ख़ुद भी

---

1 ترمذی، کتاب الدعوات، ۵/۳۰۸، حدیث: ۳۵۳۰

2 الشفاء، الباب الثانی فی تکمیل محاسنه، فصل واما نظافة جسمه... الخ، ۱/۶۱

इन बातिनी गुनाहों से बचने की कोशिश करेंगे, क्यूंकि वालिदैन अगर नेक और गुनाहों से बचने वाले हों तो इन की बरकात इन के बच्चों को भी नसीब होती हैं

ख़ानदान से मुतअ़ल्लिक़ आदाब

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस से मुराद वोह आदाब हैं जो एक मज़बूत व ख़ुशहाल ख़ान्दान की बक़ा के लिये इन्तिहाई ज़रूरी हैं। मषलन वालिदैन का अदबो एह़तिराम और दीगर छोटों बड़ों के साथ हुस्ने सुलूक, सिलए रह़मी (रिश्तेदारों से अच्छे सुलूक) की फ़ज़ीलत और क़त्एे तअ़ल्लुक़ी की मज़म्मत वग़ैरा। इन आदाब के बजा लाने की बिना पर एक बेटी ख़ानदान भर की आंखों का तारा बन जाती है, लिहाज़ा वालिदैन पर लाज़िम है कि वोह अपनी बेटी की परवरिश में ज़र्रा भर कोताही न होने दें और बचपन ही से इस की इस्लामी तर्बिय्यत का ऐसा एहतिमाम करें कि हर कोई उन की बेटी के हुस्ने सुलूक की ता'रीफ़ करे न कि इस की बद सुलूकी व बे अदबी और बद कलामी का हर त़रफ़ चरचा हो।

बच्चे बिल ख़ुसूस बेटियां चूंकि वालिदैन से दीगर रिश्ते नातों की पहचान सीखने के साथ साथ येह भी सीखती हैं कि इन के वालिदैन अपने क़राबत दारों से किस त़रह़ पेश आते हैं, लिहाज़ा अगर आप अपने बा'ज़ क़राबत दारों से सिलए रह़मी के बजाए

क़त्ए तअ़ल्लुक़ी कर लेंगे या उन के साथ अच्छा सुलूक नहीं करेंगे तो आप की अवलाद बिल ख़ुसूस बेटियों के ज़ेहनों से इन रिश्तों का तक़द्दुस हमेशा के लिये ख़त्म नहीं तो कम ज़रूर हो जाएगा, लिहाज़ा ख़ुद भी याद रखे और अपनी बेटी को भी येह बात ख़ूब बावर करा दीजिये :

- सिलए रह्मी से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ राज़ी होता है क्यूंकि सिलए रह्मी ख़ुद उसी का हुक्म है।
- सिलए रह्मी से फ़िरिश्ते ख़ुश होते हैं।
- सिलए रह्मी करने वाले की लोग ता'रीफ़ करते हैं।
- सिलए रह्मी से शैत़ाने लईन ग़मनाक होता है।
- सिलए रह्मी से उ़म्र और रिज़्क़ में बरकत होती है।
- सिलए रह्मी से दिली इत़्मीनान ह़ासिल होता है और ह़दीष शरीफ़ में भी है कि (फ़राइज़ की तक्मील के बा'द) अफ़्ज़ल आ'माल वोह हैं जो मोमिन की ख़ुशी का बाइ़ष बनें।(1)
- सिलए रह्मी से मह़ब्बत में ज़ियादती होती है, क्यूंकि जिन लोगों पर उस ने एह़सान किये होंगे वोह सब उस की ख़ुशी व ग़म में शरीक होंगे और उस की मदद भी करते रहेंगे जिस की वजह से बाहमी मह़ब्बत बढ़ेगी।

مدینہ

(1) المعجم الکبیر، ۱۱/ ۵۹، حدیث ۱۱۰۷۹

❁ सिलए रह़्मी मौत के बा'द भी अज्रो षवाब का बाइ़ष बनती है, क्यूंकि लोग उस की मौत के बा'द उस के एह़सानात को याद कर के उस के लिये ईसाले षवाब व दुआ़ का एहतिमाम करेंगे ।[1]

मुआ़शरे से मुतअ़ल्लिक़ आदाब

मुआ़शरा बाहम मिल जुल कर रहने वाले अफ़राद के मजमूए़ को कहते हैं जिस की बुन्याद की मुख़्तलिफ़ वुजूह हैं । मषलन बिरादरी, क़ौम, ज़बान, मज़हब और जुग़राफ़ियाई, ह़ुदूद वग़ैरा । आ़म तौ़र पर मुख़्तलिफ़ मुआ़शरों की तशकील में इजतिमाई ज़िन्दगी की बक़ा के लिये दो उमूर को बड़ी अहम्मिय्यत ह़ासिल है : एक येह कि लोग इस त़रह़ ज़िन्दगी बसर करें कि उन की ज़ात की तक्मील हो और दूसरा येह कि ऐसे उसूलो ज़वाबित़ तय्यार किये जाएं जिन के ज़रीए़ बाहमी ख़ुशगवार तअ़ल्लुक़ात क़ाइम हों । येह उसूल व ज़वाबित़ चूंकि इन्सान बनाते हैं, लिहाज़ा इन में तब्दीली की हमेशा गुन्जाइश रहती है और येह तब्दील होते भी रहते हैं, मगर इस्लामी मुआ़शरा ऐसा है जिस के बुन्यादी अ़क़ाइद और उसूले शरीअ़त में इख़्तितामे वह़्ी के बा'द कभी कोई तब्दीली आई है न आएगी, इस लिये कि येह एक ऐसी मुतवाज़िन और मो'तदिल ज़िन्दगी का नाम है जिस में इन्सानी अ़क़्ल, रुसूम व रवाज और तमाम मुआ़शरती

1 تنبیہ الغافلین، باب صلۃ الرحم، ص ۷۳، مفہوماً

आदाब वह़िये इलाही की रोशनी में त़ै पाते हैं और वह़ी के नुज़ूल का दरवाज़ा चूंकि हमेशा के लिये बन्द हो चुका है, लिहाज़ा अब इस्लामी मुआ़शरे के जो बुन्यादी ख़द्दो ख़ाल सरवरे काइनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने ह़क़्क़े तर्जुमान से बयान हुवे हैं इन में किसी क़िस्म की तब्दीली मुमकिन नहीं, अलबत्ता ! हर दौर की ज़रूरिय्यात के मुत़ाबिक़ पैदा होने वाले जदीद मसाइल का ह़ल भी क़ुरआनो सुन्नत के बयान कर्दा उसूलों से ही अख़ज़ किया जाता है। अगर येह ह़ल क़ुरआनो सुन्नत के मुख़ालिफ़ न हो बल्कि मुसलमानों की फ़लाह़ो सलाह़ से तअ़ल्लुक़ रखता हो तो इसे क़बूल कर लिया जाएगा वरना रद्द कर दिया जाएगा। चुनान्चे,

एक इस्लामी व फ़लाही मुआ़शरे की बक़ा के लिये इन्तिहाई ज़रूरी है कि उस के अफ़राद की तर्बिय्यत पर भरपूर तवज्जोह दी जाए, लिहाज़ा बेहतर येह है कि इस का आग़ाज़ मां की गोद से हो ताकि इस तर्बिय्यत के अषरात ज़िन्दगी भर बच्चे पर मुरत्तब रहें। इस तनाज़ुर में बेटी की बेहतरीन परवरिश की अहम्मिय्यत मज़ीद बढ़ जाती है क्यूंकि अगर आज उस की तर्बिय्यत में कोई कमी रह गई तो इस का इज़ाला करना नामुमकिन नहीं तो मुश्किल ज़रूर हो जाएगा।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हम मुसलमान हैं और एक इस्लाम पसन्द मुआ़शरे का ह़िस्सा हैं, हमें चाहिये कि कभी भी बेटी की परवरिश में उस की मदनी तर्बिय्यत से कोताही न बरतें, उसे मुआ़शरती बुराइयों की क़बाह़तों से कमाह़क़्क़ुहू आगाह करें ताकि वोह इन से बच सके।

बचपन की आ़दत कम ही छूटती है

आज एक बाप अपनी आठ दस साला बेटी को जिस बेपर्दगी के साथ अपने हमराह एक ऐसी तक़रीब में ले जाता है, जहां मर्दों औ़रतों का इख़्तिलात़ है, मूसीक़ी और म्यूज़िक का एहतिमाम है, बे ह़या और मग़रिबी तहज़ीब की मारी लड़कियां ढोल की थाप पर निहायत ही बेहूदगी के साथ रक़्स कर रही हैं और वोह फूल जैसी बच्ची येह सब देख और सुन रही है कि येह बड़ी बड़ी लड़कियां अपने कज़िन के साथ नाच रही हैं, गाना गा रही हैं। तो उस का येही ज़ेहन बनेगा कि चूंकि यहां पर मुझे मेरा बाप ले कर आया है, लिहाज़ा ऐसी जगह जाना और नाचना गाना दुरुस्त है क्यूंकि अगर येह सब ग़लत़ होता तो मेरा बाप हरगिज़ मुझे यहां न लाता।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें चाहिये कि अपनी इस्लाह़ के साथ साथ अपने घर वालों की इस्लाह़ पर भी तवज्जोह रखें और उन्हें ऐसी तक़ारीब व महाफ़िल से दूर रखें जो ख़िलाफ़े शरअ़ उमूर पर मुश्तमिल हों। इस लिये कि जो लोग वा वुजूदे क़ुदरत अपनी औ़रतों और बहनों, बेटियों को बे पर्दगी से मन्अ़ न करें वोह "दय्यूष" हैं और दय्यूष के मुतअ़ल्लिक़ जन्नत से महरूमी की वईद मरवी है। अहलो इ़याल को ख़िलाफ़े शरअ़ महाफ़िल में ले जाने वालों की तम्बीह के लिये फ़तावा रज़विय्या

शरीफ़ में मरकूम एक फ़तवे से चन्द इक़्तिबासात का मफ़्हूम पेशे ख़िदमत है । चुनान्चे,

जन्नत से महरूमी

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (इरशाद) फ़रमाते हैं :

ثَلَاثَةٌ لَا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ: اَلْعَاقُّ لِوَالِدَيْهِ وَالدَّيُّوثُ وَرَجُلَةُ النِّسَاءِ

तीन शख़्स जन्नत में न जाएंगे, मां-बाप को आज़ार (तक्लीफ़) देने वाला, दय्यूष और मर्द बनने वाली औरत ।[1]

महबूब के साथ हश्र

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

لَا يُحِبُّ رَجُلٌ قَوْمًا اِلَّا جَعَلَهُ اللهُ مَعَهُمْ जो जिस क़ौम से महब्बत रखेगा **अल्लाह** तआ़ला उसे उन्हीं के साथ कर देगा ।[2] और फ़रमाते हैं : مَنْ اَحَبَّ قَوْمًا حَشَرَهُ اللهُ فِيْ زُمْرَتِهِمْ जो जिस क़ौम से दोस्ती करेगा **अल्लाह** तआ़ला उसे उन्हीं के गुरौह में उठाएगा ।[3] और फ़रमाते हैं : اَلْمَرْءُ مَعَ مَنْ اَحَبَّ आदमी अपने दोस्त के साथ होगा ।[4]

---

1. مستدرك، كتاب الايمان، ١٠٨ ثلاثة لايدخلون الجنة، ١/٢٥٢، حديث: ٢٥٢
2. مسند احمد، مسند السيدة عائشه، ٩/ ٤٧٨، حديث: ٢٥١٧٥
3. المعجم الكبير، ٣/١٩، حديث: ٢٥١٩
4. بخاری، كتاب الادب، باب علامة حب الله، ٤/ ١٤٧، حديث: ٦١٦٨

बनी इस्राईल की तबाही के अस्बाब

बनी इस्राईल में पहली ख़राबी जो आई वोह येह थी कि इन में एक शख़्स दूसरे से मिलता तो उस से कहता : يَا هٰذَا! اِتَّقِ اللّٰهَ وَدَعْ مَا تَصْنَعُ فَاِنَّهٗ لَا يَحِلُّ لَكَ या'नी ऐ शख़्स ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डर और अपने काम से बाज़ आ कि येह ह़लाल नहीं । फिर दूसरे दिन उस से मिलता और वोह अपने उसी ह़ाल पर होता तो येह उस को अपने साथ खाने पीने और पास बैठने से न रोकता । पस जब वोह येह काम करने लगे तो अल्लाह तआ़ला ने उन के दिल बाहम एक दूसरे पर मारे कि मन्अ़ करने वालों का ह़ाल भी उन्हीं ख़त़ा वालों के मिष्ल हो गया । फिर फ़रमाया :

لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿۷۸﴾ كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿۷۹﴾

(پ۶، المائدۃ: ۷۸، ۷۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बनी इस्राईल के काफ़िर ला'नत किये गए दावूद व ईसा बिन मरयम की ज़बान पर, येह बदला है उन की नाफ़रमानियों और ह़द से बढ़ने का, वोह आपस में एक दूसरे को बुरे काम से न रोकते थे, अलबत्ता वोह सख़्त बुरी ह़रकत थी कि वोह करते थे ।* (1)

مدینہ

1 ابوداود، کتاب الملاحم، باب الامر والنھی، ۴/ ۱۶۲، حدیث: ۴۳۳۶

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَ اِمَّا یُنْسِیَنَّكَ الشَّیْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۶۸﴾ (پ۷، الانعام:۶۸)	**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** *और अगर शैतान तुझे भुला दे तो याद आने पर ज़ालिमों में मत बैठ।*

तफ़्सीरे अह़मद में है : ज़ालिम लोग बद मज़हब फ़ासिक़ और काफ़िर हैं इन सब के साथ बैठना मन्अ़ है।[1]

नाज़ुक शीशियां

औ़रत मोम की नाक बल्कि राल (चीड़का गुंद) की पुड़या बल्कि बारूद की डिब्बिया है, आग के एक अदना से लगाऊ में भक़ से हो जाने (या'नी फ़ौरन जल जाने) वाली है। अ़क़्ल भी नाक़िस और दीन भी नाक़िस और त़ीनत (या'नी बुन्याद) में कजी (टेढ़ापन) और शहवत (ख़्वाहिशे नफ़्स) में मर्द से सो हिस्से बेशी (ज़ाइद) और सोह़बते बद का अषरे मुस्तक़िल मर्दों को बिगाड़ देता है। फिर इन नाज़ुक शीशियों का क्या कहना जो ख़फ़ीफ़ (या'नी मा'मूली सी) ठेस से पाश पाश हो जाएं। येह सब मज़मून या'नी इन अ़वरात का नाक़िशातुल अ़क़्ल वद्दीन और कच त़ब्अ़ और शहवत

1 تفسیراتِ احمدیہ، ص۳۸۸

में ज़ाइद और नाज़ुक शीशियां होना सहीह़ ह़दीषों में इरशाद हुवे हैं और सोह़बते बद के अषर में तो ब कषरत अह़ादीषे सहीह़ा वारिद हैं। अज़ां जुम्ला येह ह़दीषे जलील कि मिश्काते ह़िक्मते नबुव्वत की नूरानी क़िन्दील है। फ़रमाते हैं : अच्छे मुसाह़िब और बुरे हमनशीन की कहावत ऐसी है जैसे मुश्क वाला और लूहार की भट्टी, कि मुश्क वाला तेरे लिये नफ़्अ़ से ख़ाली नहीं या तो तू उस से ख़रीदेगा कि ख़ुद भी मुश्क वाला हो जाएगा वरना ख़ुश्बू तो ज़रूर पाएगा और लूहार की भट्टी तेरा घर फूंक देगी या कपड़े जला देगी या कुछ नहीं तो इतना होगा कि तुझे बदबू पहुंचे। अगर तेरे कपड़े इस से काले न हुवे तो धुंवां तो ज़रूर पहुंचेगा।[1]

फ़ोह़ूश गीत शैत़ानी रस्म और काफ़िरों की रीत है। शैत़ान मलऊ़न बे ह़या है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कमाल ह़या वाला। बे ह़याई की बात से ह़या वाला नाराज़ होगा और वोह बे ह़या का उस्ताद उन्हें अपना मस्ख़रा बनाएगा। ह़दीष में है रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (इरशाद) फ़रमाते हैं : اَلْجَنَّةُ حَرَامٌ عَلٰى كُلِّ فَاحِشٍ اَنْ يَّدْخُلَهَا जन्नत हर फ़ोह़ूश बकने वाले पर ह़राम है।[2]

مدینہ

1 بخاری، کتاب البیوع، باب فی العطار وبیع المسک، ۲/ ۲۰، حدیث: ۲۱۰۱

2 موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب الصمت وآداب اللسان، باب ذم الفحش والبذاء، ۷/ ۲۰۴، حدیث: ۳۲۵

यूंही बे ज़रूरत व ह़ाजते शरइय्या लोगों से फ़ोह़्श कलामी भी ना जाइज़ व ख़िलाफ़े ह़या है। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (इरशाद) फ़रमाते हैं :

اَلْحَيَاءُ مِنَ الْاِيْمَانِ وَالْاِيْمَانُ فِي الْجَنَّةِ، وَالْبَذَاءُ مِنَ الْجَفَاءِ وَالْجَفَاءُ فِي النَّارِ

ह़या ईमान से है और ईमान जन्नत में है और फ़ोह़्श बकना बे अदबी है और बे अदबी दोज़ख़ में है।(1)

مَا كَانَ الْفُحْشُ فِي شَيْءٍ قَطُّ اِلَّا شَانَهُ، وَلَا كَانَ الْحَيَاءُ فِي شَيْءٍ قَطُّ اِلَّا زَانَهُ फ़ोह़्श जब किसी चीज़ में दख़्ल पाएगा उसे ऐबदार कर देगा और ह़या जब किसी चीज़ में शामिल होगी उस का सिंगार कर देगी।(2) (3)

गुनाहगार कौन ?

प्यारे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! नाबालिग़ शरई अह़काम का मुकल्लफ़ नहीं लिहाज़ा उस का गुनाह शुमार नहीं लेकिन वालिदैन या सरपरस्त अगर बच्चों को ऐसी जगह ले गए जहां बे पर्दगी व बेह़याई और गाने बाजे वग़ैरा गुनाहों का सिलसिला है जैसा कि फ़ी ज़माना आ़म तक़ारीब का ह़ाल है तो उस ले जाने वाले पर अपने गुनाह के साथ साथ इस ना बालिग़ को ले जाने का गुनाह भी होगा। नीज़ येह बच्चा या बच्ची जिस को बचपन ही से

مدینہ

1. ترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی الحیاء، ۳/۴۰۶، حدیث: ۲۰۱۶
2. ترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی الفحش والتفحش، ۳/۳۹۲، حدیث: ۱۹۸۱ بتغیر
3. فتاویٰ رضویہ، ۲۲/۲۱۰ تا ۲۱۵

आप इस त़रह़ का माह़ोल फ़राहम कर रहे हैं सिने शुऊ़र को पहुंच कर इन आ़दतों को इख़्तियार करेंगे तो इस का सबब भी आप ही बने। फिर जब इसे समझाएंगे कि येह अफ़्आ़ल ग़लत़ और ख़िलाफ़े शरअ़ हैं तो इस के ज़ेह्न में येह सुवाल पैदा होगा कि अगर येह ग़लत़ था तो मेरे वालिद मुझे क्यूं बचपन से ऐसी जगहों पर ले जाते रहे। चुनान्चे, आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت लिखते हैं कि बचपन से जो आ़दत पड़ती है कम छूटती है तो अपने नाबालिग़ बच्चों को ऐसी नापाकियों से न रोकना उन के लिये مَعَاذَاللّٰه जहन्नम का सामान तय्यार करना और ख़ुद सख़्त गुनाह में गिरिफ़्तार होना है। **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّ قُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓىٕكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَاۤ اَمَرَهُمْ وَ يَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ۝٦

(پ۲۸، التحریم: ۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं इस पर सख़्त करें (दुरुश्त ख़ू) फ़िरिश्ते मुक़र्रर हैं जो **अल्लाह** का हुक्म नहीं टालते और जो उन्हें हुक्म हो वोही करते हैं।* (1)

مدینہ

1 (फ़तावा रज़विय्या, जि. 22/215)

फ़ेशन की ख़राबियां

फ़ी ज़माना इस्लामी बहनों के लिबास में फ़ेशन के नाम पर जो ख़राबियां पैदा हो रही हैं वोह किसी पर मख़्फ़ी नहीं। ह़त्ता कि मज़हबी माह़ोल से वाबस्ता औ़रतें भी शादी बियाह की तक़ारीब व महाफ़िल में ऐसे लिबास पहनती हैं कि अल अमान वल ह़फ़ीज़। अफ़्सोस ! सद अफ़्सोस ! पर्दा करना तो कुजा ! जिन आ'ज़ा का छुपाना वाजिब है फ़ेशन के नाम पर उन को भी कमा ह़क़्क़ुहू नहीं छुपाया जाता। ह़ालांकि औ़रत से मुराद ही छुपाने की चीज़ है। इस का सब से बड़ा सबब येह है कि मुसलमानों ने इस्लामी तहज़ीब से नाता तोड़ कर मग़रिबी तहज़ीब से रिश्ता जोड़ लिया है। क्यूंकि इस्लामी तहज़ीब में तो क़ल्ब व निगाह को पाक रखने की ताकीद मरवी है और कभी भी इस त़रह़ की नाम निहाद आज़ादी नहीं दी गई। येही वजह है कि उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने इरशाद फ़रमाया : अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (इस बनाव सिंघार को) देख लेते जो औ़रतों ने अब ईजाद कर लिया है तो उन को (मस्जिद में आने से) मन्अ़ फ़रमा देते।[1]

अ़ल्लामा बदरुद्दीन मह़मूद बिन अह़मद ऐनी ह़नफ़ी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی (मुतवफ़्फ़ा **855** हि.) इस ह़दीषे पाक की शर्ह़ में तह़रीर फ़रमाते हैं : अगर उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا इस बनाव सिंघार को देख लेतीं

---

1 بخاری، کتاب الاذان، باب انتظار الناس قیام الامام العالم، ۱ / ۳۰۰، حدیث: ۸۶۹

जो इस ज़माने की बिल ख़ुसूस शहरी औ़रतों ने ईजाद कर लिया है और अपनी ज़ेबाइश और नुमाइश में ग़ैर शरई त़रीक़े और मज़मूम बिदआ़त निकाल ली हैं, तो वोह औ़रतों की बहुत ज़ियादा मज़म्मत फ़रमातीं ।[1]

मा'लूम हुवा फ़ेशन के नाम पर हर दौर में औ़रतों ने कोई न कोई नया काम ज़रूर किया जिस की मज़म्मत उस वक़्त की सालिह़ात ने अपना फ़र्ज़े मन्सबी जान कर ज़रूर की, लिहाज़ा आइये ! इस्लामी तारीख़ के पुरबहार गुलिस्तान में झांक कर अपनी बुज़ुर्ग ख़वातीन की ह़याते त़य्यिबा से चन्द मदनी फूल चुनते हैं कि जिन की ख़ुश्बू से हम अपनी बेटियों की परवरिश के दौरान उन की ज़िन्दगियों को महका सकें । चुनान्चे,

ख़ातूने जन्नत की परवरिश

सब से पहले हमें येह याद रखना चाहिये कि इमामुल अम्बिया, मह़बूबे किब्रिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी शहज़ादी ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़ातूने जन्नत, बीबी फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا की जो मदनी तर्बिय्यत फ़रमाई हर इस्लामी बहन को इसे पेशे नज़र रखना चाहिये । इस लिये कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا सरवरे काइनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आंखों की ठन्डक थीं, आप कहीं सफ़र पर तशरीफ़ ले जाना चाहते तो सब से आख़िर में अपनी शहज़ादी से मिल कर रवाना होते और वापसी में सब से पहले आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا

1 عمدۃ القاری، ابواب صفۃ الصلوۃ، باب انتظار الناس قیام الامام العالم، ۴/ ۶۴۹، تحت الحدیث: ۸۶۹

के पास तशरीफ़ लाते । चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने हादिये आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तर्बिय्यत का ह़क़ अदा करते हुवे शादी के बा'द अपने शोहर की ख़िदमत और घर के काम काज के साथ साथ अपने शहज़ादों की जो मदनी तर्बिय्यत फ़रमाई اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दुन्या आज भी इस की अ़ज़मत की गवाह है और اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ता क़ियामे क़ियामत रहेगी । चुनान्चे, आ'ला ह़ज़रत عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ رَبِّ الۡعِزَّت आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के घराने की अ़ज़मत को ख़िराजे अ़क़ीदत पेश करते हुवे फ़रमाते हैं :

क्या बात रज़ा उस चमनिस्ताने करम की
ज़हरा है कली जिस में ह़ुसैन और ह़सन फूल

शहज़ादिये कौनेन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की ह़याते त़य्यिबा के बे शुमार महकते मदनी फूलों में से आप की ह़याते त़य्यिबा के आख़िरी अय्याम का सिर्फ़ येही एक वाक़िआ़ काफ़ी है जिसे शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ ने दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ **397** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''पर्दे के बारे में सुवाल जवाब''** के सफ़ह़ा **200** पर कुछ यूं नक़्ल फ़रमाया है : सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द ख़ातूने जन्नत, शहज़ादिये कौनैन, ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا पर ग़मे मुस्त़फ़ा का इस क़दर ग़लबा

हुवा कि आप के लबों की मुस्कुराहट ही ख़त्म हो गई ! अपने विसाल से क़ब्ल सिर्फ़ एक ही बार मुस्कुराती देखी गई । इस का वाक़िआ कुछ यूं है : ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को येह तश्वीश थी कि उ़म्र भर तो ग़ैर मर्दों की नज़रों से ख़ुद को बचाए रखा है अब कहीं बा'दे वफ़ात मेरी कफ़न पोश लाश ही पर लोगों की नज़र न पड़ जाए ! एक मौक़अ़ पर ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते उ़मैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने कहा : मैं ने ह़बशा में देखा है कि जनाज़े पर दरख़्त की शाख़ें बांध कर एक डोली की सी सूरत बना कर उस पर पर्दा डाल देते हैं । फिर उन्हों ने खजूर की शाख़ें मंगवा कर उन्हें जोड़ कर उस पर कपड़ा तान कर सय्यिदा ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को दिखाया । आप बहुत ख़ुश हुईं और लबों पर मुस्कुराहट आ गई । बस येही एक मुस्कुराहट थी जो सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द देखी गई ।[1]

बिन्ते सईद बिन मुसय्यब की परवरिश

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की साह़िब ज़ादी पैकरे हुस्नो जमाल थी, आप ने अपनी बेटी की तर्बिय्यत इस त़रह़ फ़रमाई कि वोह न सिर्फ़ कुरआने पाक की ह़ाफ़िज़ थी बल्कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों को भी बहुत ज़ियादा जानने

मदीना

1 पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 200 ब ह़वाला जज़्बुल क़ुलूब मुतरजिम, स. 231

वाली थी। अगर येह कहा जाए कि वोह सूरत के साथ साथ हुस्ने सीरत की दौलत से भी माला माल थी तो बेजा न होगा। चुनान्चे, येही वजह है कि ख़लीफ़ा अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान ने आप से आप की इस बेटी के लिये अपने बेटे वलीद की शादी का पैग़ाम भेजा मगर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इन्कार कर दिया, ख़लीफ़ा ने बहुत कोशिश की, कि किसी त़रह़ आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه राज़ी हो जाएं लेकिन आप बराबर इन्कार फ़रमाते रहे, फिर वोह ज़ुल्मो सितम पर उतर आया और एक सर्द रात उस ज़ालिम ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को **100** कोड़े मारे और ऊन का जुब्बा पहना कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه पर ठन्डा पानी डलवा दिया मगर फिर भी आप ने अपनी बेटी का रिश्ता न दिया। आप ने अपनी बेटी को बचपन से जो पाकीज़गी व त़हारत का दर्स दिया था आप नहीं चाहते थे कि वोह इस दुन्या की चकाचोंद में भूल जाए। येही वजह थी कि आप ने अपनी इस बेटी का निकाह़ अपने एक शागिर्द ह़ज़रते सय्यिदुना अबू वदाआ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه से फ़रमाया जो इन्तिहाई ग़रीब थे।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू वदाआ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ख़ुद अपनी इस शादी का वाक़िआ़ कुछ यूं बयान फ़रमाते हैं कि मैं ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की मह़फ़िल में बाक़ाइदगी से ह़ाज़िर हुवा करता था, फिर चन्द दिन ह़ाज़िर न हो सका। जब दोबारा

आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास ह़ाज़िर हुवा तो आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने पूछा इतने दिन कहां थे ? मैं ने अ़र्ज़ की : मेरी अहलिय्या का इन्तिक़ाल हो गया था बस इसी परेशानी में चन्द दिन ह़ाज़िरी की सआ़दत ह़ासिल न हो सकी। येह सुन कर आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : मुझे इत्तिलाअ़ क्यूं नहीं दी कि मैं भी जनाज़े में शिर्कत कर लेता ? ह़ज़रते सय्यिदुना अबू वदाआ़ رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इस पर मैं ख़ामोश रहा। जब मैं ने रुख़्सत चाही तो आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : क्या दूसरी शादी करना चाहते हो ? मैं ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! मैं बहुत ग़रीब हूं, मेरे पास ब मुश्किल चन्द दिरहम होंगे, मुझ जैसे ग़रीब की शादी कौन करवाएगा। तो आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाने लगे : मैं तेरी शादी करवाऊंगा। मैं ने ह़ैरान होते हुवे अ़र्ज़ की : क्या आप मेरी शादी कराएंगे ? फ़रमाया : हां ! मैं तेरी शादी कराऊंगा। फिर आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द बयान की और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदो सलाम पढ़ा और मेरी शादी अपनी बेटी से करा दी। मैं वहां से उठा और घर की त़रफ़ रवाना हुवा। मैं इतना ख़ुश था कि मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करूं, फिर मैं सोचने लगा कि मुझे किस किस से अपना क़र्ज़ा वुसूल करना है, इसी त़रह़ मैं आने वाले लम्ह़ात के बारे में सोचने लगा फिर मैं ने मग़रिब की नमाज़ मस्जिद में अदा की और

दोबारा घर आ गया। मैं घर में अकेला ही था, फिर मैं ने ज़ैतून का तेल और रोटी दस्तरख़्वान पर रख कर खाना शुरूअ़ ही किया था कि दरवाज़े पर दस्तक हुई। मैं ने पूछा : कौन? आवाज़ आई : सईद। मैं समझ गया कि ज़रूर येह ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ही होंगे। इतनी देर में वोह अन्दर तशरीफ़ ले आए। मैं ने अ़र्ज़ की : आप मुझे पैग़ाम भेज देते, मैं ख़ुद ही ह़ाज़िर हो जाता। फ़रमाने लगे : नहीं! तुम इस बात के ज़ियादा ह़क़दार हो कि तुम्हारे पास आया जाए। मैं ने अ़र्ज़ की : फ़रमाइये! मेरे लिये क्या हुक्म है? आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : अब तुम ग़ैर शादी शुदा नहीं हो, तुम्हारी शादी हो चुकी है, मैं इस बात को नापसन्द करता हूं कि तुम शादी हो जाने के बा'द भी अकेले ही रहो, फिर एक त़रफ़ हटे तो मैं ने देखा कि उन की बेटी उन के पीछे खड़ी थी। उन्हों ने उस का हाथ पकड़ा और कमरे में छोड़ आए और मुझे फ़रमाया : येह तुम्हारी ज़ौजा है। इतना कहने के बा'द तशरीफ़ ले गए। मैं दरवाज़े के क़रीब गया और जब इत़्मीनान हो गया कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه जा चुके हैं तो वापस कमरे में आ कर उस शर्मो ह़या की पैकर को ज़मीन पर बैठे हुवे पाया।

मैं ने जल्दी से ज़ैतून के तेल और रोटियों वाला बरतन उठा कर एक त़रफ़ रख दिया ताकि वोह इसे न देख सके। फिर मैं अपने मकान की छत पर चढ़ कर अपने पड़ोसियों को आवाज़ देने लगा।

थोड़ी ही देर में सब जम्अ़ हो गए और पूछने लगे : क्या परेशानी है ? मैं ने जब बताया कि ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपनी बेटी से मेरी शादी करा दी है और वोह अपनी बेटी को मेरे घर छोड़ गए हैं तो लोगों ने बे यक़ीनी से पूछा : क्या वाक़ेई ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने तुझ से अपनी बेटी की शादी कराई है ? मैं ने कहा : अगर यक़ीन नहीं आता तो मेरे घर आ कर देख लो, उन की बेटी मेरे घर में मौजूद है। येह सुन कर सब मेरे घर आ गए। जब मेरी वालिदा को येह मा'लूम हुवा तो वोह भी फ़ौरन ही आ गईं और मुझ से फ़रमाने लगीं : अगर तीन दिन से पहले तू इस के पास गया तो तुझ पर मेरा चेहरा देखना ह़राम है। मैं तीन दिन इन्तिज़ार करता रहा, चौथे दिन जब गया और उसे देखा तो बस देखता ही रह गया। वोह हुस्नो जमाल का शाहकार थी, क़ुरआने पाक की ह़ाफ़िज़ा, हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों को बहुत ज़ियादा जानने वाली और शोहर के हुक़ूक़ को बहुत ज़ियादा पहचानने वाली थी। इसी त़रह़ एक महीना गुज़र गया। न तो ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मेरे पास आए और न ही मैं ह़ाज़िर हो सका, फिर मैं ही उन के पास गया। वोह बहुत सारे लोगों के झुरमट में जल्वा फ़रमा थे, सलाम जवाब के बा'द मजलिस के ख़त्म होने तक उन्हों ने मुझ से कोई बात न की,

जब सब लोग जा चुके और मेरे इ़लावा कोई और न बचा तो उन्हों ने मुझ से फ़रमाया : उस इन्सान को कैसा पाया ? मैं ने अ़र्ज़ की : हु़ज़ूर ! (आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बेटी ऐसी सिफ़ात की ह़ामिल है कि) शायद कोई दुश्मन ही उसे नापसन्द करे वरना दोस्त तो ऐसी चीज़ों को पसन्द करते हैं। फ़रमाया : अगर वोह तुझे तंग करे तो लाठी से इस्लाह़ करना। फिर जब मैं घर की त़रफ़ रवाना हुवा तो उन्हों ने मुझे बीस हज़ार दिरहम दिये जिन्हें ले कर मैं घर चला आया।(1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! औ़रत के लिये बनाव सिंघार करना तो जाइज़ है मगर उस पर लाज़िम है कि अपने शोहर के लिये चार दीवारी के अन्दर रहते हुवे बने संवरे, ग़ैर मर्दों को दिखाने के लिये नहीं। लेकिन अफ़्सोस ! आज कल घर में तो सादे और मैले कुचेले कपड़े पहने जाते हैं मगर बाहर जाना हो तो अच्छे से अच्छे कपड़े पहनने की कोशिश की जाती है। लिहाज़ा निय्यत कर लीजिये कि जैसा शरीअ़त ने तर्बिय्यत व परवरिश करने का हुक्म दिया है اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हम अपनी बेटी की उसी त़रह़ परवरिश करने की कोशिश करेंगे और उस को ऐसी बा पर्दा मुबल्लिग़ा बनाएंगे जो इस्लामी बहनों में मदनी इन्क़िलाब बरपा करेगी।

(1) عُیونُ الحکایات، الحکایۃ السابعۃ والعشرون، ۱/ ۸۰ مفہوماً

नसीहत ब वक़्ते रुख़्सत

हज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते ख़ारिज़ा फ़ज़ारी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهَا ने अपनी बेटी को शादी के बा'द घर से रुख़्सत करते वक़्त नसीहत आमोज़ मदनी फूलों का जो गुलदस्ता अ़ता फ़रमाया ऐ काश ! हर मां येह मदनी फूल अपनी बेटी को रुख़्सती के वक़्त याद करा दे। येह मदनी फूल कुछ यूं हैं :

❁ बेटी तू जिस घर में पैदा हुई अब यहां से रुख़्सत हो कर एक ऐसी जगह (या'नी शोहर के घर) जा रही है जिस से तू वाक़िफ़ नहीं और एक ऐसे साथी (या'नी शोहर) के पास जा रही है जिस से मानूस नहीं।

❁ उस के लिये ज़मीन बन जाना वोह तेरे लिये आस्मान होगा।

❁ उस के लिये बिछौना बन जाना वोह तेरे लिये सुतून होगा।

❁ उस के लिये कनीज़ बन जाना वोह तेरा ग़ुलाम होगा।

❁ उस से कम्बल की त़रह़ चिमट न जाना कि वोह तुझे ख़ुद से दूर कर दे।

❁ उस से इस क़दर दूर भी न होना कि वोह तुझे भुला ही दे।

❁ अगर वोह क़रीब हो तो क़रीब हो जाना और अगर दूर हटे तो दूर हो जाना।

❁ उस के नाक, कान और आंख (या'नी हर त़रह़ के राज़) की

हिफ़ाज़त करना कि वोह तुझ से सिर्फ़ तेरी ख़ुश्बू सूंघे (या'नी राज़ की हिफ़ाज़त और वफ़ादारी पाए)।

❁ वोह तुझ से सिर्फ़ अच्छी बात ही सुने और सिर्फ़ अच्छा काम ही देखे।[1]

इन मदनी फूलों से वोह माएं नसीहत हासिल करें जो बेटियों के घर को जन्नत बनाने के अच्छे मश्वरे देने के बजाए शोहर, नन्दों और सास पर हुकूमत करने के तरीक़े सिखाती हैं। फिर जब बेटी इन मश्वरों पर अमल करने की कोशिश करती है तो फ़ितना फ़साद की एक ऐसी आग भड़क उठती है कि दोनों घराने इस की लपेट में आ जाते हैं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें अपनी अवलाद की मदनी तर्बिय्यत करने की तौफ़ीक़ मरहमत फ़रमाए और इस (तहरीरी) बयान को हमारे लिये ज़ख़ीरए आख़िरत बनाए।

अपनी अवलाद की इस्लामी उसूलों के मुताबिक़ तर्बिय्यत करने के लिये दा'वते इस्लामी का मदनी माहोल किसी ने'मत से कम नहीं, लिहाज़ा ख़ुद भी दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता रहे और अपने अहलो इयाल को भी इस महके महके मदनी माहोल से वाबस्ता रखे, क्यूंकि दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो कर बे शुमार लोगों की ज़िन्दगियां बदल चुकी हैं, आप भी अपनी और अपने अहलो इयाल की ज़िन्दगियों में ख़ुशगवार मदनी तब्दीली पैदा करने के लिये फ़ैज़ाने औलिया से

مدینہ

1 احیاء علوم الدین، کتاب آداب النکاح، القسم الثانی من ھذا الباب النظر فی حقوق الزوج، ۲/ ۷۵

माला माल दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये और अपने शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पाबन्दी से शिर्कत फ़रमाइये फिर देखिये आप पर कैसा मदनी रंग आता है ! तरग़ीब के लिये दा'वते इस्लामी के हफ़्तावर सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ की एक मदनी बहार पेशे ख़िदमत है ।

सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ की मदनी बहार

पंजाब (पाकिस्तान) की एक इस्लामी बहन के बयान का लुब्बे लुबाब है कि मैं गाने बाजे सुनने की बहुत शौक़ीन थी । मेरे पास गानों की बहुत सारी केसिटें और किताबें जम्अ़ थीं बल्कि मैं ख़ुद भी गाने लिखती थी । फ़िल्मों डिरामो की ऐसी दीवानी थी कि लगता था शायद इन के बिग़ैर (مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ) मैं जी न सकूंगी । अफ़्सोस ! निगाहों की हिफ़ाज़त का बिल्कुल भी ज़ेहन नहीं था । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के करम से बिल आख़िर गुनाहों भरी ज़िन्दगी से कनारा कशी की सूरत बन ही गई, हुवा यूं कि मैं ने दा'वते इस्लामी के इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल की । इस सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में होने वाले बयान, दुआ़ और इस्लामी बहनों की इनफ़िरादी कोशिश के मदनी फूलों ने मेरे दिल में मदनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं ने अपने गुनाहों से तौबा की और सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये

दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो गई। ता दमे तह़रीर ह़ल्क़ा ज़िम्मेदार की ह़ैषिय्यत से सुन्नतों की ख़िदमत की सआ़दत ह़ासिल कर रही हूं।

करम जो आप का ऐ सय्यिदे अबरार हो जाए
तो हर बदकार बन्दा दम में नेकूकार हो जाए

अपनी बेटियों को बिल्कुल इस क़िस्म की किसी तक़रीब और दा'वत में न ले कर जाइये जहां ख़िलाफ़े शरअ़ काम होते हों, जहां उस के अख़्लाक़िय्यात बरबाद हों जहां उस की आख़िरत बरबाद हो। हम सब को कोशिश करनी है, इस बे ह़याई का मुक़ाबला करना है और हम निय्यत करें मेरे घर की कोई इस्लामी बहन बेटी उठेगी और इस्लामी बहनों में मदनी इन्क़िलाब लाएगी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम सब को अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

सोह़बते बद का असर

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : बुरे **मसाह़िब** (साथी, हमनशीन) से बच कि तू उसी के साथ पहचाना जाएगा या'नी जैसे लोगों के पास आदमी की निशस्त व बरख़ास्त होती है, लोग उसे वैसा ही जानते हैं।

(کنز العمال، کتاب الصحبة، قسم الاقوال، الباب الثالث فی الترهیب عن صحبة السوء، ۹/ ۱۹، حدیث: ۲۴۸۳۹)

مآخذومراجع

نمبر شمار	کتاب	مصنف / مولف / مطبوعہ
1	قرآن مجید	کلام باری تعالیٰ مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
2	کنز الایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ، مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
3	تفسیراتِ احمدیہ	شیخ احمد بن ابی سعید ملّا جیون جونپوری، متوفی ۱۱۳۰ھ، پشاور
4	روح المعانی	شہاب الدین سید محمود آلوسی، متوفی ۱۲۷۰ھ، دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۰ھ
5	مسند امام احمد	امام احمد بن محمد بن حنبل، متوفی ۲۴۱ھ، دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
6	سنن الدارمی	امام حافظ عبد اللہ بن عبد الرحمن دارمی، متوفی ۲۵۵ھ، دار الکتاب العربی، بیروت ۱۴۰۷ھ
7	صحیح بخاری	امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ، دار الکتب العلمیۃ، بیروت

8	صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ۲۶۱ھ دار ابن حزم، بیروت ۱۴۱۹ھ
9	سنن ابن ماجه	امام ابو عبد اللہ محمد بن یزید ابن ماجه، متوفی ۲۷۳ھ، دار المعرفه، بیروت ۱۴۲۰ھ
10	سنن ترمذی	امام ابو عیسٰی محمد بن عیسٰی ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ، دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
11	سنن ابی داود	امام ابو داود سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ، دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۱ھ
12	موسوعة ابن ابی الدنیا	حافظ امام ابو بکر عبد اللہ بن محمد قُرشی، متوفی ۲۸۱ھ، مکتبة العصریه، بیروت ۱۴۲۶ھ
13	مسند ابی یعلی	احمد بن علی بن مثنی موصلی، متوفی ۳۰۷ھ، دار الکتب العلمیة، بیروت ۱۴۱۸ھ
14	المعجم الصغیر	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ، دار الکتب العلمیة، بیروت ۱۴۰۴ھ
15	المعجم الکبیر	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ، دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۲ھ

16	مستدرک	امام محمد بن عبد اللہ حاکم نیشاپوری، متوفی ۴۰۵ھ، دار المعرفہ، بیروت ۱۴۱۸ھ
17	حلیۃ الاولیاء	ابو نعیم احمد بن عبد اللہ اصفہانی شافعی، متوفی ۴۳۰ھ، دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۱۹ھ
18	شعب الایمان	امام ابو بکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ، دار الکتب العلمیۃ، بیروت
19	شرح السنۃ	امام ابو محمد حسین بن مسعود بغوی، متوفی ۵۱۶ھ، دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۲۴ھ
20	مجمع الزوائد	حافظ نور الدین علی بن ابی بکر ہیثمی، متوفی ۸۰۷ھ، دار الفکر، بیروت
21	الجامع الصغیر	حافظ جلال الدین عبد الرحمن بن ابی بکر السیوطی، متوفی ۹۱۱ھ، دار الکتب العلمیۃ، بیروت
22	شرح صحیح مسلم	امام محی الدین ابو زکریا یحیی بن شرف نووی، متوفی ۶۷۶ھ، دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۰۱ھ
23	عمدۃ القاری	امام بدر الدین ابو محمد محمود بن احمد عینی، متوفی ۸۵۵ھ، دار الفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ

24	اشعۃ اللمعات	شیخ محقق عبد الحق محدث دھلوی، متوفی ۱۰۵۲ھ، کوئٹہ ۱۳۳۲ھ
25	نزھۃ القاری	علامہ مفتی محمد شریف الحق امجدی، متوفی ۱۴۲۰ھ، فرید بک سٹال مرکز الاولیاء لاھور ۱۴۲۱ھ
26	فتاوی رضویہ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ، رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاھور
27	ملفوظاتِ اعلیٰ حضرت	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ، مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
28	بہارِ شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفی ۱۳۶۷ھ، مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
29	الشفا بتعریف حقوق المصطفی	قاضی ابو الفضل عیاض مالکی، متوفی ۵۴۴ھ، مرکز اھلسنت برکات رضا ھند ۱۴۲۳ھ
30	تنبیہ الغافلین	فقیہ ابو اللیث نصر بن محمد سمرقندی، متوفی ۳۷۳ھ، دار الکتاب العربی، بیروت ۱۴۲۰ھ
31	قوت القلوب	شیخ ابو طالب محمد بن علی مکی، متوفی ۳۸۶ھ، دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۲۶ھ

32	احیاء علوم الدین	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ، دار صادر، بیروت
33	عیون الحکایات	امام عبد الرحمن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ، دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۲۴ھ
34	بھجۃ الاسرار	ابو الحسن نور الدین علی بن یوسف شطنوفی، متوفی ۷۱۳ھ، دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۲۳ھ
35	روض الریاحین	امام عبد اللہ بن اسعد یافعی، متوفی ۷۶۸ھ، دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۲۱ھ
36	غیبت کی تباہ کاریاں	حضرت علامہ مولانا محمد الیاس قادری دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ، باب المدینہ کراچی
37	پردے کے بارے میں سوال جواب	حضرت علامہ مولانا محمد الیاس قادری دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ، باب المدینہ کراچی

नेक सोहबत का असर

फ़रमाने सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام : नेक सोहबत सारी इबादात से अफ़्ज़ल है, देखो सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان सारे जहां के औलिया से अफ़्ज़ल हैं क्यूं ? इस लिये कि वोह सोहबत याफ़्ताए जनाबे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं। (مرآۃ المناجیح، ۳/ ۳۱۲)

फ़ेहरिस्त

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	तीन बेटियों की परवरिश पर इन्आ़म	13
अनोखी शहज़ादी	2	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जन्नत वाजिब कर दी	14
यक़ीने कामिल की बहारें	3	बेटियों या बहनों की परवरिश पर इन्आ़म	14
शैख़ शाह किरमानी का तआ़रुफ़	4	मक़ामे शुक्र	15
अ़ज़ीम बाप की अ़ज़ीम बेटी	5	बेटी की परवरिश के मदनी फूल	16
क़ब्लअज़ इस्लाम औ़रत की हैषिय्यत	6	(1) बेटी की पैदाइश पर रद्दे अ़मल	16
ज़िन्दा दफ़्न करने की क़बीह़ रस्म का आग़ाज़	7	(2) कान में अज़ान	18
		(3) तह़नीक	20
बेटियों को दफ़्न करने की चन्द वुजूहात	8	(4) अच्छा नाम रखना	21
		(5) बाल मुंडवाना व अ़क़ीक़ा करना	24
बेटियों को मिला इस्लाम का साइबान	11	(6) रिज़्क़े ह़लाल खिलाना	25
बेटियों के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल फ़रामीने मुस्त़फ़ा	12	(7) अच्छी बातें सिखाना	26
		(8) ता'लीम व इस्लामी तर्बिय्यत	27
एक बेटी की परवरिश पर इन्आ़म	13	(1) बुन्यादी व ज़रूरी अ़क़ाइद की ता'लीम	30

(2) कुरआनो सुन्नत की ता'लीम	35	बनी इस्राईल की तबाही के अस्बाब	47
(3) फ़र्ज़ उ़लूम और दीनी ता'लीम	37	नाज़ुक शीशियां	48
आदाबे ज़िन्दगी	39	गुनाहगार कौन ?	50
ज़ात से मुतअ़ल्लिक़ आदाब	39	फ़ेशन की ख़राबियां	52
ख़ानदान से मुतअ़ल्लिक़ आदाब	41	ख़ातूने जन्नत की परवरिश	53
मुआ़शरे से मुतअ़ल्लिक़ आदाब	43	बिन्ते सईद बिन मुसय्यब की परवरिश	55
बचपन की आ़दत कम ही छूटती है	45	सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ की मदनी बहार	63
जन्नत से महरूमी	46	माख़ज़ो मराजेअ़	65
महबूब के साथ ह़श्र	46	फ़ेहरिस्त	70

कोई देख तो नहीं रहा !

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़र्क़द सबख़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुनाफ़िक़ जब देखता है कि कोई (उसे देखने वाला) नहीं है तो वोह बुराई की जगहों में दाख़िल हो जाता है वोह इस बात का तो ख़याल रखता है कि लोग उसे न देखें मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ देख रहा है इस बात का लिहाज़ नहीं करता।

(احیاء العلوم، کتاب المراقبۃ والمحاسبۃ، المرابطۃ الثانیۃ المراقبۃ، ۵/۱۳۰، ملخصاً)

दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के निगरान ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद इमरान अ़त्तारी سلّمه الباری के तह़रीरी बयानात

त़ब्अ़ शुदा व ज़ेरे तब्अ़ बयानात

﴾1﴿ फ़ैज़ाने मुर्शिद (सफ़ह़ात : 46)	﴾13﴿ जन्नत की तय्यारी (सफ़ह़ात : 134)
﴾2﴿ एह़सासे ज़िम्मेदारी (सफ़ह़ात : 50)	﴾14﴿ वक़्फ़े मदीना (सफ़ह़ात :86)
﴾3﴿ मदनी कामों की तक़्सीम (सफ़ह़ात : 68)	﴾15﴿ मदनी कामों की तक़्सीम के तक़ाज़े (सफ़ह़ात : 73)
﴾4﴿ मदनी मश्वरे की अहम्मिय्यत (सफ़ह़ात : 32)	﴾16﴿ सूद और उस का इ़लाज (सफ़ह़ात : 92)
﴾5﴿ सीरते सय्यिदुनाअबुदरदा رضی اللہ تعالیٰ عنہ (सफ़ह़ात : 75)	﴾17﴿ प्यारे मुर्शिद (सफ़ह़ात : 48)
﴾6﴿ बुराइयों की मां (सफ़ह़ात : 112)	﴾18﴿ फ़ैसला करने के मदनी फूल (सफ़ह़ात : 56)
﴾7﴿ ग़ैरत मन्द शोहर (सफ़ह़ात : 48)	﴾19﴿ जामेअ़ शराइ़त पीर (सफ़ह़ात : 88)
﴾8﴿ सह़ाबी की इनफ़िरादी कोशिश (सफ़ह़ात : 124)	﴾20﴿ कामिल मुरीद (सफ़ह़ात : 48)
﴾9﴿ पीर पर ए'तिराज़ मन्अ़ है (सफ़ह़ात : 60)	﴾21﴿ अमीरे अहले सुन्नत की दीनी ख़िदमात (सफ़ह़ात : 480)
﴾10﴿ जन्नत का रास्ता (सफ़ह़ात : 56)	﴾22﴿ हमें क्या हो गया है ? (कुल सफ़ह़ात :**116**)
﴾11﴿ मक़्सदे ह़यात (कुल सफ़ह़ात : 60)	﴾23﴿ मौत का तसव्वुर (कुल सफ़ह़ात :**44**)
﴾12﴿ सदक़े का इन्आ़म (कुल सफ़ह़ात : 60)	﴾24﴿ गुनाहों की नुहूसत

ज़ेरे तरतीब तह़रीरी बयानात

(**1**) **एक आंख वाला आदमी**	(**2**) **गुनाहों की नुहूसत**

याद दाश्त

(दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । إن شاء الله عزوجل इल्म में तरक़्क़ी होगी ।)

‌उ़नवान	सफ़्ह़ा	‌उ़नवान	सफ़्ह़ा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

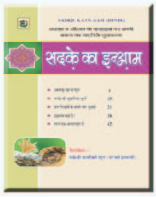

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माह़ोल में ब कषरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है, आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते षवाब सुन्नतों की तर्बिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

-: मक्तबतुल मदीना की शाख़ें :-

❁... अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, तीकोनी बाग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अह़मदाबाद-1, फ़ोन : 9327168200
❁... मुम्बई :- 19 - 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई, फ़ोन : 022-23454429
❁... नागपूर :- सैफ़ी नगर रोड़, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, मोमिन पूरा, नागपूर फ़ोन : 9326310099
❁... अजमेर :- 19 / 216 फ़लाह़े दारैन मस्जिद के क़रीब, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, फ़ोन : (0145) 2629385
❁... हुबली :- A.J मुधल कोम्पलेक्स, A.J मुधल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक - फ़ोन : 08363244860
❁... हैदराबाद :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पूरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, फ़ोन : (040) 2 45 72 786
❁... बनारस :- अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बा शाह की तकया, मदन पूरा, बनारस, फ़ोन : 09369023101

MAKTABATUL MADINA
421, URDU MARKET, MATYA MAHAL, JAMA MASJID
DELHI - 110006, PH : 011-23 284560
email : maktabadelhi@gmail.com
web : www.dawateislami.net

MC 1286